THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180379

UNIVERSAL LIBRARY

रूस की श्रेष्ठ कहानियाँ

रूस के ख्यातिप्राप्त कथाकारों की कला-कृतियाँ

संपादक :
प्रभुनन्दन गुप्त

★

वन्दना प्रकाशन
म थु रा

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83.1 G89 R Accession No. H [illegible]

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below.

रूस की श्रेष्ठ कहानियाँ

रूस के ख्यातिप्राप्त कथाकारों की कला-कृतियाँ

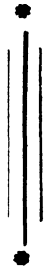

संपादक :

प्रभुनन्दन गुप्त

वन्दना प्रकाशन

म थु रा

प्रकाशक :

वन्दना प्रकाशन,
गली रावलिया, मथुरा।

*

प्रथम संस्करण

मार्च, १९५६

*

मूल्य

एक रुपया बारह आना

*

मुद्रक :

बैजनाथ दानी,
लोक साहित्य प्रेस,
मथुरा।

गति–क्रम

१. अँधेरे में	....	आन्तोन चेखव	.... ७
२. छोटा-सा मजाक	....	,, ,,	... १६
३. सिद्धहस्त	....	एम० प्रिशविन	... २४
४. नन्हा बाज	...	विलिस लाकिन्स	.... ३३
५. हंसो की झील	...	आन्द्रेई इवानोव	... ४२
६. नाइटिंगेल क्रासिंग	....	इब्राहीम अब्दुल्लीन	... ५३
७. नन्हा आन्द्रेई	....	ग्रिगोरी वोरोवनिको	... ६०
८. शीतकालीन ओक वृक्ष	...	यूरी नागविन	... ७२
९. जब सिपाही घर लौटा	....	आन्द्रेई इवानोव	... ८३
१०. बूढ़ा जान्द्रा	....	निकोलाई रोजकोव	... ९६

रूस की श्रेष्ठ कहानियाँ

अँधेरे में

—आन्तोन चेखोव

एक औसत आकार की मक्खी असिस्टेन्ट पब्लिक प्राजीक्यूटर वकील गागिन की नाक में घुस गयी। संभव है कि मक्खी ने खाली बैठे-बैठे कौतूहलवश ऐसा किया हो या वह केवल मूर्खतावश वहाँ घुस गयी हो, या शायद वह अँधेरे में भटकती हुई वहाँ पहुंच गयी हो; कारण कुछ भी रहा हो पर नाक को यह आक्रमण अच्छा न लगा और उसने एक छींक की चेतावनी दी। गागिन ने छींका, इतने जोर से छींका, इतनी कर्णभेदी आवाज के साथ छींका, इतना झुंझलाकर छींका कि उसका बिस्तर काँप गया और झनझना उठा। गागिन की पत्नी मारिया मिखाइलोवा भी, जो एक भारी-भरकम शरीर और सुनहरे बालों वाली औरत थी, जाग पड़ी। उसने अँधेरे में घूर कर देखा, एक आह भरी और करवट बदलकर लेट गयी। पाँच मिनट बाद उसने फिर करवट बदली और अपनी आँखें और भी कसकर मूँद लीं। पर उसे दुबारा नींद न आ सकी। बहुत देर तक आहें भरने और करवटें बदलने के बाद वह अपने पति के शरीर के ऊपर से सरकती हुई पलंग से नीचे उतरी और स्लीपरें पहन कर खिड़की के पास चली गयी।

बाहर अँधेरा था। वह केवल पेड़ों और सायबानों की काली-काली छतों की रूप-रेखाएँ देख सकी। पूरब की ओर अँधेरा धीरे-धीरे छँट रहा था। एक सफेदी-सी उभर रही थी पर वह भी धुंधलाती हुई नजर आती थी। निद्रा और अंधकार में लिपटा हुआ वातावरण निस्तब्ध था। यहाँ तक कि वह चौकीदार भी, जिसे रात को अपनी खट-खट से रात्रि की शान्ति भंग करने के लिए पैसे मिलते थे, खामोश था; लैन्ड्रेल पक्षी भी शान्त थे, जो पक्षियों की जाति में एकमात्र ऐसा पक्षी है जो राजधानी में गर्मियों में रहने वालों के साथ रहना नापसंद नहीं करता।

मारिया मिखाइलोवना ने स्वयं इस शान्ति को भंग किया। खिड़की के पास खड़े होकर बाहर आँगन में देखते हुए वह सहसा चीख उठी। उसे ऐसा लगा कि उसने सनोबर के छोटे-छोटे पेड़ों वाली कटी हुई झाड़ियों के पास की फूलों की क्यारियों की तरफ से किसी काली आकृति को सरक कर मकान की तरफ आते देखा। पहले तो उसने सोचा कि कोई गाय या घोड़ा होगा, मगर अपनी आँखें मलकर देखने के बाद उसने स्पष्ट रूप से पहचाना कि वह किसी मनुष्य की आकृति थी।

फिर वह काली आकृति रसोई के बाहर की तरफ वाली खिड़की की ओर जाती हुई दिखाई दी, और कुछ देर वहाँ खड़े रहने के बाद उसने एक पाँव खिड़की के चौखट पर रखा और वह अंधकारमय खिड़की के रास्ते अन्दर जाकर गायब हो गयी।

"चोर!" मारिया के मस्तिष्क में एक बिजली-सी कौंध गयी और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी।

एक क्षण में, कल्पना ने वह चित्र अङ्कित किया जो ग्रामीण बंगलों में रहने वाली सभी महिलाओं को इतना भयभीत कर देता है, एक चोर रसोई में घुसता है, वहाँ से वह चुपके-चुपके खाने के कमरे में आता है,...अलमारी से चाँदी के बर्तन...फिर सोने का कमरा...हाथ

में कुल्हाड़ा...हत्यारों जैसी सूरत...सोने के गहने-पाते। मारिया के पाँव काँपने लगे और उसके सारे शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी।

"वासया !" उसने अपने पति को झँझोड़ते हुए कहा। "वासिल! वासिली प्रोकोफिएविच ! हे भगवन्, यह तो मुरदों की तरह सोते हैं ! उठो, वासिल, भगवान् के लिए उठो !"

"ऊँह !" असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब ने बुड़बुड़ाकर कहा और एक गहरी साँस लेकर चप-चप की आवाज पैदा करने लगे।

"भगवान के लिए, उठो भी ! रसोई में चोर घुसा है ! मैं खिड़की के पास खड़ी बाहर देख रही थी, मैंने एक आदमी को खिड़की से चढ़कर अन्दर कमरे में जाते देखा है। रसोई से वह खाने के कमरे में जायेगा...अल्मारी में चम्मच हैं ! बासिल ! मावरा येगोरोवना के घर में पारसाल ऐसे ही चोरी हुई थी।"

"क...क.. क्या बात है ?"

"हे भगवान, यह तो सुनते भी नहीं। ओ पत्थर की मूरत, मैं तुमसे कह रही हूं कि मैंने एक आदमी को अभी खिड़की के रास्ते रसोई में जाते देखा है !...पेलागेया डर जायेगी...और अल्मारी में चाँदी के बरतन रखे हैं !"

"सब बकवास है !"

"तुम तो अजीब आदमी हो, बासिल ! मैं तुमसे कह रही हूं हम लोग खतरे में हैं और तुम यहाँ पड़े-पड़े बुड़बुड़ा रहे हो ! आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्या तुम चाहते हो कि हमारे घर की सारी चीजें चोरी चली जायें और हमारी गरदनें कट जायें ?"

असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब धीरे-धीरे उठ कर पलंग पर बैठ गए और उन्होंने अपनी जम्हाइयों से वातावरण को बोझल कर दिया।

"तुम लोग भी एक मुसीबत हो !" उन्होंने बुड़बुड़ाकर कहा। "हमें क्या रात को भी चैन नहीं मिलेगा ? जरा-सी बात के लिए मुझे जगा दिया !"

"लेकिन, बासिल, मैं कसम खाकर कहती हूं, मैंने एक आदमी को खिड़की से अन्दर आते देखा है।"

"तो क्या हुआ ? आया है तो आने दो।...शायद वह पेलागेया वाला फायरमैन होगा, उससे मिलने आया होगा !"

"क्या...क्या ..क्या ? क्या कहा तुमने ?"

"मैंने कहा कि पेलागेया का फायरमैन उससे मिलने आया होगा।"

"यह तो और भी बुरी बात है," मारिया मिखाइलोवना ने चिल्लाकर कहा। "वह तो चोर से भी बदतर है। मैं अपने घर में यह सब खुराफात नहीं बरदाश्त करूंगी।"

"शि: ! इतनी दूध की नहाई तो तुम नहीं हो। मैं खुराफात बरदाश्त नहीं करूंगी !...मैं तुमसे कहता हूँ कि ऐसे अनजान शब्द इस्तेमाल न किया करो जिनका कोई मतलब नहीं होता। मेरी जान,यह रीति तो युगों पुरानी है और परम्परा द्वारा प्रतिष्ठित है। फायरमैन तो होते ही इसलिए हैं कि जाकर नौकरानियों से मिला करें।"

"नहीं बासिल, तुम मुझे नहीं जानते, क्या तुम समझते हो कि मैं अपने घर में ऐसी...ऐसी...हरकतें होने दूंगी। मेहरबानी करके अभी इसी वक्त रसोई में जाकर उसे घर से निकाल दो ! इसी दम ! कल मैं पेलागेया से कह दूंगी कि अगर फिर कभी ऐसी हरकत की तो खैरियत नहीं है। जब मैं मर जाऊँ तो तुम घर में जो खुराफात चाहे होने देना पर अभी तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगी। अभी जाओ, फौरन !"

"लानत है....." गागिन ने झुँझलाकर बुड़बुड़ाते हुए कहा। "जरा अपना मुर्गियों जितना दिमाग इस्तेमाल करने की कोशिश करो —मेरे वहाँ जाने में क्या तुक है ?"

"बासिल, मैं बेहोश हो जाऊँगी !"

गागिन ने झुँझलाकर जमीन पर थूका, अपने स्लीपर पहने, एक बार फिर थूका और कमरे से निकल कर रसोई की तरफ चल दिया। वहाँ घटाटोप अंधेरा था और असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब को टटोल-टटोल कर रास्ता ढूँढ़ना पड़ा। अंधेरे में कुछ देर ढूँढ़ने के बाद उन्हें बच्चों के कमरे का दरवाजा मिला और उन्होंने आया को जगाया।

"वासलिसा," उन्होंने पुकारा, "तुम आज शाम मेरा ड्रेसिंग गाउन साफ करने के लिए ले गयी थीं, वह कहाँ है ?"

"साहब, वह तो मैंने पेलागेया को साफ करने को दे दिया था।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर इस घर में कभी किसी काम का कोई ढङ्ग भी होगा कि नहीं। जब तुम कोई चीज ले जाती हो तो उसे उसकी जगह पर वापस क्यों नहीं रखतीं ? अब तुम्हारी वजह से मुझे वगैर ड्रेसिंग गाउन के सारे घर में घूमना पड़ेगा।"

रसोई में जाकर वह रसोई की अलमारी के पास वाले संदूक की ओर बढ़े जिस पर खाना बनाने वाली नौकरानी सोती थी।

"पेलागेया," उन्होंने नौकरानी का कंधा पकड़ कर झंझोड़ते हुए कहा। "सुनती नहीं हो पेलागेया ! बस अब ज्यादा बनो नहीं ! तुम सो नहीं रही हो। अभी तुम्हारी खिड़की के रास्ते अन्दर कौन आया था ?"

"हुः ! कैसी बात कहते हैं आप ! मेरी खिड़की के रास्ते कोई अन्दर क्यों आने लगा ?"

"मेरी आँख में धूल झोंकने की कोशिश न करो। खैरियत इसी में है कि वह जो तुम्हारा आशिक बदमाश है, उससे कह दो कि यहाँ से

निकल जाये। सुनती हो ? हमें उसका इस तरह यहाँ के हेरे-फेरे करना बिल्कुल पसंद नहीं।"

"साहब, आपका दिमाग तो ठीक है ? कैसी बात सोचते हैं आप ? मैं ही ऐसी बेबकूफ हूं कि सब कुछ बर्दाश्त कर लेती हूं। दिन भर भागती रहती हूं, एक पल को दम मारने की फुरसत नहीं मिलती और रात में मुझे यह सब सुनना पड़ता है। महीने में कुल चार रूबल मिलते हैं...और ऊपर से चाय और शकर भी अपनी ही लानी पड़ती है।...और ये सब मुसीबतें पीटने के बाद अपमान के अलावा और कुछ भी नहीं मिलता।...मैं एक व्योपारी के यहाँ काम करती थी, वहाँ मेरे साथ कभी ऐसा बरताव नहीं किया गया।"

"अच्छा, बस–बस, यह झूठ-मूठ का रोना बन्द करो। मैंने कह दिया कि तुम्हारे उस उचक्के यार को यहाँ से फौरन जाना होगा ! सुन लिया तुमने ?"

"साहब, आपने यह बात कही कैसे !" पेलागेया ने कहा, उसका स्वर आंसुओं से रुँधा हुआ था। "आप जैसे पढ़े-लिखे...शरीफ लोग ...आपको हमारे जैसे बेचारे मुसीबत के मारे लोगों के बारे में ऐसी कल्पना करने से पहले सोच-विचार कर लेना चाहिए।..." वह रोने लगी। "कोई भी हमारा अपमान कर सकता है, हमारा पक्ष लेने वाला कोई भी नहीं है।"

"ओह, खैर...बात यह नहीं है कि मैं इसका बुरा मानता हूं ! तुम्हारी मालकिन ने मुझे भेजा था। जहाँ तक मेरा सवाल है तुम अपनी खिड़की के रास्ते शैतान को भी अन्दर बुला लो, तो मेरा क्या।"

असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब के पास इसके अलावा और चारा ही क्या था कि वह अपनी गल्ती मान लेते और अपनी बीवी के पास लौट जाते।

"हाँ, पेलागेया," उन्होंने कहा, "तुम मेरा ड्रेसिंग गाउन साफ करने के लिए लाई थीं, कहाँ रखा है ?"

"साहब, माफ कीजियेगा, मैं उसे आपकी कुर्सी पर रखना भूल गयी। वहाँ चूल्हे के पीछे खूँटी पर टँगा है।"

गागिन चूल्हे के पास अपना ड्रेसिंग गाउन ढूँढ़ने लगा और जब मिल गया तो उसे पहनकर वह अपने सोने के कमरे की तरफ स्लीपरें घसीटता हुआ चल दिया।

मारिया मिखाइलोवना बिस्तर पर लेटी अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। तीन मिनट तक तो वह बिल्कुल शान्त रही, पर फिर उसे चिन्ता होने लगी।

"इतनी देर कहाँ लगा दी इन्होंने !" उसने सोचा। "अगर वह आदमी योंही कोई खब्ती है, तब तो...खैर...कोई बात नहीं है, लेकिन अगर कोई चोर हुआ तो ?"

उसकी कल्पना में एक दूसरा ही चित्र खिंच गया। उसका पति अँधेरी रसोई में जाता है...कुल्हाड़ा गिरता है...वह मर जाता है, उसके मुँह से आवाज भी नहीं निकलती...चारों ओर खून फैला हुआ है..."

पाँच मिनट बीते...साढ़े पाँच मिनट बीते, छः मिनट बीते।.... उसके माथे पर पसीने की ठंडी बूँदें आ गयीं।

"बासिल !" उसने चीखकर कहा। "बासिल !"

"चिल्ला क्यों रही हो ? मैं यहाँ हूँ....." उसने अपने पति की आवाज और कदमों की आहट सुनी। "लोग समझेंगे कि तुम्हें कोई मारे डाल रहा है।"

असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब पलंग के सिरे पर बैठ गये।

"वहाँ तो कोई नहीं है," उन्होंने कहा। "तुमने सपना देखा

होगा, पगली ! तुम चिंता न करो—तुम्हारी वह बेवकूफ नौकरानी अपनी मालकिन जैसी ही सच्चरित्र है । तुम भी कितनी डरपोक हो !"

असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब पत्नी से छेड़-छाड़ करने लगे । उन्हें अब नींद नहीं आ रही थी ।

"कैसी भोली और डरपोक हो तुम भी !" उन्होंने हँसकर कहा । "तुम कल डाक्टर के यहाँ जाकर अपना इलाज करा लो, तुम्हें जागते में भी सपने दिखायी देते हैं । तुम अपना मनोविश्लेषण करा लो !"

"कहीं से तारकोल की बू आ रही है," उनकी पत्नी ने कहा । "तारकोल है या ... ऐसी ही कोई चीज है ... प्याज. . . छिः !"

"हुंः, हाँ....है तो किसी चीज की बू । . . . मुझे तो नींद नहीं आ रही है । मैं सोचता हूँ कि मोमबत्ती जलादूँ । माचिस कहाँ है ? हाँ, अच्छा याद आया, मैं तुम्हें अदालत के प्राजीक्यूटर साहब की तसवीर दिखाता हूँ । कल वह यहां से चले गए और चलते वक्त हम सब को अपनी एक-एक तसवीर भी देते गए । तसवीर पर उनके दस्तखत भी हैं ।"

गागिन ने दीवार पर माचिस रगड़ कर मोमबत्ती जलायी । लेकिन वह अभी तस्वीर लाने के लिए बिस्तर से उठ भी नहीं पाया था कि उसे पीछे से एक हृदय-विदारक चीख सुनाई दी । उसने पीछे मुड़कर देखा कि उनकी पत्नी की दो बड़ी-बड़ी आंखें विस्मय, भय और क्रोध से उसे घूर रही थीं ।

"क्या तुमने अपना ड्रेसिंग गाउन रसोई में उतारा था ?" उसने पूछा, उसके होंठ तक सफेद पड़ गए थे ।

"क्यों ?"

"तुम खुद ही देखो !"

असिस्टेन्ट प्राजीक्यूटर साहब ने अपने आपको देखा और भौचक्का रह गया। उनके कंधों पर उनके अपने ड्रेसिंग गाउन के स्थान पर फायरमैन का लम्बा कोट पड़ा हुआ था। वह वहाँ कैसे आया ? वह इस उधेड़बुन में पड़े ही हुए थे कि उनकी पत्नी की कल्पना में एक दूसरा ही चित्र अंकित हो गया—अंधकार, खामोशी, खुसुर-पुसुर की आवाज आदि का एक अत्यन्त भयानक और स्तम्भित कर देने वाला चित्र।

छोटा-सा मजाक

—आन्तोन चेखोव

शीतकाल के एक स्वच्छ निर्मल दिन के दोपहर के समय की घटना है। . . . भीषण तुषारपात हो रहा था, दांत से दांत बज रहे थे। नाद्येन्का के घुघराले बालों पर धुनकी हुई रुई जैसी बर्फ चांदी की तरह चमक रही थी, और उसके ऊपरी होंठ पर नमी की एक कोमल-सी तह जमी हुई थी। हम एक ऊँची-सी पहाड़ी की चोटी पर खड़े थे, उसकी बाँहें मेरी बाहों में पड़ी हुई थी। पहाड़ी की ढलान, जिसमें सूरज एक दर्पण की तरह प्रतिबिम्बित हो रहा था, हमारे पैरों के पास आरंभ होकर सीधे नीचे तक चली गयी थी। हमारे पास ही एक छोटी सी बर्फ गाड़ी खड़ी थी जिस पर गहरे लाल रंग की गद्दियां पड़ी थीं।

"नाद्येन्का पेत्रोवना, आइये बर्फ पर फिसलते हुए नीचे चले!" मैंने अनुरोध करते हुए कहा—"एक बार, बस एक बार! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ हमें एक खरोंच भी नहीं लगेगी। पर, उसे डर लग रहा था। अपने रोएँदार जूतों और हिमाच्छादित पहाड़ी की तली के बीच की दूरी उसे एक भयानक अथाह गर्त के समान प्रतीत हो रही थी। जिस क्षण मैंने उससे बर्फ गाड़ी पर चढ़ने को कहा और उसने नीचे

देखा, उसके होश उड़ गये। यदि उसने उस गर्त में कूदने का साहस किया, तो क्या होगा! तब तो वह मर ही जायेगी या पागल हो जायेगी।

"चलिए भी!" मैंने आग्रह किया—"डरने की कोई बात नहीं है! आप समझती क्यों नहीं कि यह केवल आपके हृदय की कमजोरी है, कायरता है!"

आखिर नाद्येन्का मान गयी। मैं उसकी सूरत देखते ही समझ गया कि उसने यह समझते हुए ही मेरी बात मानी है कि वह अपनी जान जोखिम में डाल रही है। जब मैंने उसे बर्फ-गाड़ी में बिठाया, उसका रंग पीला था और वह कांप रही थी। अपनी बांह मैंने उसके गले में डाल दी और हम दोनों उस अथाह गर्त में कूद पड़े।

बर्फ-गाड़ी गोली की तरह सनसनाती हुई, हवा को चीरती चली जा रही थी। गरजती हुई हवा के तमाचे हमारे मुह पर लग रहे थे, कानों में सीटियां-सी बज रही थी; हवा अपने रोष में गरज रही थी, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह हमारा सर धड़ से अलग कर देगी। हवा के झोंकों के कारण सांस लेना भी कठिन हो रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि स्वयं शैतान ने हमें अपने पंजे में जकड़ लिया था और गरजता हुआ हमें नरक में से घसीटे लिए जा रहा था। हमारे आस-पास की सारी चीजें मिलकर एक लम्बे तेजी से भागते हुए रास्ते में बदल गयी थीं।. . . .एक क्षण और बीता और ऐसा मालूम हुआ कि हम दोनों मर रहे हैं।

"नाद्या, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!" मैंने दबी जबान से कहा।

बर्फ-गाड़ी की रफ्तार धीमी पड़ गयी; हवा की गरज और बर्फ-गाड़ी की पटरियों की भनभनाहट में अब वह भयानकता नहीं रह गयी थी। मैंने दम साध लिया और हम पहाड़ी के नीचे पहुंच गए। पर नाद्येन्का का अभी तक यह हाल था कि वह जिन्दा कम और मुर्दा

ज्यादा मालूम होती थी। उसका रङ्ग पीला पड़ गया था और दम फूल रहा था।...मैंने उसे सहारा देकर खड़ा कर दिया।

"अब कुछ भी हो जाय, मैं फिर कभी ऐसा दुस्साहस नहीं करूँगी," उसने मेरी तरफ भयातुर आँखों से देखते हुए कहा—"कुछ भी हो जाय! मेरी तो जान ही निकल गयी थी।"

थोड़ी देर बाद जब उसके होश कुछ ठिकाने आये, तो उसने प्रश्नभरी नजरों से मेरी आँखों में आँखें डालकर देखा—क्या वह चार शब्द सचमुच मैंने कहे थे या तूफान की गरज में यों ही उसे भ्रम हुआ था? मैं उसके पास खड़ा सिगरेट पी रहा था और अपने दस्ताने को देख रहा था।

उसने मेरी बाँह में बाँह डाल दी और हम दोनों बड़ी देर तक पहाड़ी के गिर्द टहलते रहे। यह गुत्थी उसे चैन नहीं लेने दे रही थी। वे शब्द कहे गये थे या नहीं? हाँ या नहीं? हाँ या नहीं? यह उसके आत्माभिमान उसके मान, उसके जीवन, उसके सुख का प्रश्न था, एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न था। नाद्येन्का ने मेरी आँखों में आँखें डालकर अत्यन्त अधीर-उदास और तीव्र दृष्टि से देखा; वह मेरे प्रश्नों का उत्तर देती तो कुछ खोयी-खोयी सी; वह प्रतीक्षा कर रही थी कि मैं कुछ कहूँ। उसके सुन्दर मुखड़े पर कितनी भावनाओं का रङ्ग आ-जा रहा था, कितने रङ्ग बदल रहे थे! मैं देख रहा था कि वह अपने आप से संघर्ष कर रही है। वह कुछ कहना चाहती थी, कुछ पूछना चाहती थी, पर उसे शब्द नहीं मिल रहे थे; उसे बड़ा अटपटा-सा लग रहा था, वह भयभीत थी, उसका उल्लास उसे सता रहा था।...

"एक बात कहूँ?" उसने मेरी तरफ देखे बगैर कहा।

"क्या बात!" मैंने पूछा।

"आओ, चलें, एक बार फिर नीचे फिसलकर आयें।"

हम सीढ़ियों पर होते हुए पहाड़ी पर चढ़ गये। एकबार फिर मैंने पीली पड़ी हुई काँपती हुई नाद्येन्का को बर्फ-गाड़ी में बिठाया और हम तूफानी रफ्तार से उस भयानक गर्त में कूद पड़े; हवा फिर गरज रही थी, बर्फ-गाड़ी की पटरियाँ भनभना रही थीं और एक बार फिर जब रफ्तार और शोर अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच गया, मैंने दबी जबान में कहा :—

"नाद्येन्का मैं तुमसे प्रेम करता हूँ !"

जब बर्फ-गाड़ी रुकी तो नाद्येन्का ने उस पहाड़ी पर नजर दौड़ायी जिस पर फिसलते हुए हम अभी नीचे उतरे थे; फिर वह बड़ी देर तक मुझे घूरती रही, मेरी आवाज सुनती रही; मेरा स्वर बहुत शांत और उदासीनतापूर्ण था; उसकी बौखलाहट उसके अङ्ग-अङ्ग से, यहाँ तक कि उसकी शाल और टोपी की अस्त-व्यस्त दशा से भी व्यक्त हो रही थी। उसके चेहरे पर यह प्रश्न अङ्कित था।

"आखिर वह था क्या ? वह शब्द किसने कहे थे ? उसने, या मेरे कान बज रहे थे ?"

यह अनिश्चय उसे परेशान कर रहा था, उसका धीरज टूटा जा रहा था। उस बेचारी लड़की ने मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, उसकी त्योरियों पर बल थे और ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी रो देगी।

"घर चलें ?" मैंने पूछा।

"लेकिन मुझे...मुझे तो बर्फ पर फिसलने में बड़ा आनंद आता है," उसने लजाते हुए कहा। "चलो फिर फिसलें चलकर !"

उसे बर्फ पर फिसलने में 'आनंद आता था' फिर भी हर बार जब वह बर्फ-गाड़ी मे बैठती थी, उसका रङ्ग पीला पड़ जाता था, वह काँपने लगती थी और पहले ही की तरह भय के मारे उसका दम फूलने लगता था।

हम तीसरी बार बर्फ पर फिसलकर नीचे आये। मैंने देखा कि वह मेरे चेहरे की ओर देख रही थी और मेरे होठों पर उसकी नजरें जमी हुई थीं। लेकिन मैं अपने मुंह पर रूमाल रखकर खाँसा और जब हम पहाड़ी के बीच में पहुंचे तब मैंने बड़ी कठिनाई से किसी तरह कहा—"नाद्या, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

पहेली अब भी पहेली बनी हुई थी। नाद्येन्का चुपचाप कुछ सोच रही थी। ..जब मैं उसे बर्फ पर फिसलने के क्रीड़ास्थल से उसे घर वापस ले जा रहा था, उसने अपने कदम धीमे कर दिये और इस प्रतीक्षा में थी कि मैं वही शब्द फिर कहूँ। मुझे उसके हृदय की वेदना का आभास हो गया था और मुझे स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि वह पूरा प्रयत्न कर रही थी कि उसके होठों से ये शब्द न निकल जायें।

"हवा नहीं हो सकती! मैं नहीं जानती कि हवा ने ये शब्द कहे हों!"

दूसरे दिन सुबह मुझे एक चिट्ठी मिली। "अगर आज आप बर्फ पर फिसलने जायें, तो मुझे भी साथ ले लीजियेगा—एन०।" उसके बाद से मैं रोज नाद्येन्का के साथ बर्फ पर फिसलने के लिए जाने लगा और जब भी हम बर्फ-गाड़ी पर फिसलते हुए पहाड़ी से नीचे उतरते, मैं दबी जबान में कहता—

"नाद्या, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

नाद्येन्का धीरे-धीरे इस वाक्य की आदी हो गयी, उस तरह जैसे कोई शराब या नशे का आदी हो जाता है। इस वाक्य के बिना वह जिन्दा नहीं रह सकती थी। यह तो सच है कि तेजी से पहाड़ी पर फिसलना अब भी उतना ही भयावह था, परन्तु भय और सङ्कट के कारण प्रेम के उन शब्दों में, जिन्हें सुनकर वह अब भी पहले की तरह उलझन में पड़ जाती थी, और उसके हृदय को वेदना होती थी, एक विशेष आकर्षण पैदा हो जाता था। संदेह अब भी उन्हीं लोगों पर

था—मैं या हवा...वह नहीं जानती थी कि हम दोनों में से कौन उससे प्रेम कर रहा था, पर स्पष्टतः अब उसे यह जानने में दिलचस्पी नहीं रह गयी थी; उसे इसकी चिंता नहीं थी कि यह मादक सुरा किस पात्र से आ रही थी।

एक दिन दोपहर को मैं अकेला बर्फ पर फिसलने गया। भीड़ में मैंने देखा कि नाद्येन्का पहाड़ी की तरफ आ रही है; उसकी आँखें मुझे ढूंढ़ रही थीं।...वह बहुत डरी-डरी-सी सीढ़ियों पर चढ़ी।... अकेले जाना कितना भयानक था, सचमुच कितना भयानक! उसका रङ्ग बर्फ की तरह सफेद हो गया था, और वह इस तरह काँप रही थी मानो सूली पर चढ़ रही हो। पर वह पीछे मुड़कर देखे बिना बड़े सङ्कल्प के साथ ऊपर चढ़ती जा रही थी। स्पष्ट था, उसने आखिर खुद आजमाकर देखने का फैसला कर लिया था—मेरे बिना उसे क्या वे अत्यन्त मधुर शब्द सुनायी देंगे? मैंने देखा कि वह कितनी पीली पड़ गयी थी। जब वह बर्फ-गाड़ी पर चढ़ी, उसका मुंह भय के कारण खुला हुआ था; उसने अपनी आँखें मूद लीं और इस संसार से अंतिम विदा लेकर वह तेजी से नीचे की ओर फिसलती हुई चल दी।... "भन-भन..." बर्फ-गाड़ी की पटरियों की आवाज आ रही थी। मालूम नहीं नाद्येन्का को वे शब्द सुनाई दिये या नहीं। मैंने सिर्फ यह देखा कि जब वह गाड़ी पर से उतरी, उस समय वह कितनी कमजोर और थकी हुई थी। उसकी सूरत देखने से ही मालूम होता था कि उसे खुद भी नहीं मालूम था कि उसने कुछ सुना भी या नहीं। तेजी से नीचे जाते समय वह इतनी सहमी हुई थी कि उसमें कुछ सुनने, ध्वनियों में अंतर करने या समझने की शक्ति भी नहीं रह गयी थी।...

आखिरकार वसन्त आया, मार्च का महीना।...सूरज दिन प्रतिदिन अधिक उदार होता जा रहा था। हमारी बर्फ की पहाड़ी काली पड़ने लगी, उसकी चमक जाती रही और वह पिघलकर बिल्कुल ही

गायब हो गयी। हमारा बर्फ पर फिसलना भी खत्म हो गया। बेचारी नाद्येन्का को वे शब्द फिर सुनने को न मिले और अब उन्हें कहने के लिए कोई था भी नहीं। अब हवा भी नहीं हरहराती थी और मै सेन्ट पीटर्सबर्ग जाने की तैयारी कर रहा था, शायद हमेशा के लिए।

गोधूलि का समय था, एक-दो दिन बाद मैं जाने वाला था, मैं बाग में बैठा हुआ था। मेरे बाग और नाद्येन्का के घर के बीच एक ऊँची-सी काँटेदार चहारदीवारी थी।....अभी तक काफी सर्दी पड़ रही थी, खाद के नीचे की बर्फ अभी तक पिघली नहीं थी, पेड़ निर्जीव थे, पर हवा में वसन्त की महक थी। कौए बसेरे की तैयारी मे शोर मचा रहे थे। चहारदीवारी के पास जाकर मैं बड़ी देर तक एक दरार में से झाँकता रहा। मैंने नाद्येन्का को बाहर बरसाती में आते देखा; वह बड़ी उदास और धुधलाई हुई आँखों से आकाश की ओर देख रही थी। ...उसके पीले उदास चेहरे पर स्वच्छ हवा के झोंके लग रहे थे।... इससे उसे उस हवा की याद आ रही थी जो पहाड़ी पर उस समय चल रही थी जब उसने वे चार शब्द सुने थे; उसका चेहरा बहुत उदास हो गया और एक आँसू उसके गालों पर ढलक आया। उस बेचारी लड़की ने अपने दोनों हाथ सामने फैला दिये मानो वह हवा से उन शब्दों को दुबारा वापस बुला देने की प्रार्थना कर रही हो। हवा का रुख पाकर मैंने फिर दबी जबान में कहा—"नाद्या, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

हे भगवन्, नाद्येन्का को क्या हो गया था। वह चिल्लाई फिर उसके चेहरे पर एक मंद-सी मुस्कान दौड़ गई और उसने हवा में अपने दोनों हाथ फैला दिये; उसका चेहरा हर्ष से खिला हुआ था, वह कितनी सुन्दर लग रही थी।

मैं अपना सामान बांधने चला गया।

इस बात को बहुत समय बीत चुका है। नाद्येन्का की शादी हो चुकी है—उसकी शादी कर दी गई या उसने खुद अपनी इच्छा से शादी

कर ली, क्या फर्क पड़ता है—उसका पति अभिजात अभिभावक मण्डल का मंत्री है,और उसके तीन बच्चे भी है। पर नाद्येन्का अभी तक हमारे बर्फ पर फिसलने के लिए जाने वाली बात को और हवा के झोंकों से उसके कानों तक पहुंचने वाले उन शब्दों को 'नाद्येन्का, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ' को नही भूली थी; अभी तक वह उसके जीवन की सबसे सुखद, सबसे मर्मस्पर्शी और सुन्दर स्मृति थी।...

और अब, जबकि मेरी उम्र काफी हो चुकी है, मेरी समझ में नहीं आता कि मैने वे शब्द क्यों कहे थे, मैंने वह मजाक क्यों किया था।

सिद्धहस्त

—एम० प्रिशविन

बाबा इस वर्ष ७७ वर्ष के हो गये हैं, पर अब भी स्वस्थ-सानंद रहते हैं। सबेरे से रात तक व्यस्त रहते हैं और अपने फुर्सत के समय शिकार खेलने निकल जाते हैं।

पिछले साल उनके प्रिय कुत्ते झुल्का (गिजेल) की पागलपन के कारण मौत हो गई। हमारे पड़ोसियों ने कहा—"देख लेना बाबा, अब कुत्ते-बुत्ते नहीं पालेंगे। काफी संतुष्ट हो गए हैं अब तो।"

हमने भी यही सोचा था कि अब वह दूसरा पिल्ला खरीद कर नहीं पालेंगे, न उसे यहाँ-वहाँ सिखाते फिरेंगे।

पर हमारा ख्याल गलत निकला। हमारे घर में एक और पिल्ला है—अब इस बार झाल्का (दजाली) है झुल्का के स्थान पर। और घर फिर भेड़िया धसान हो गया है। वह हर तरह की ऊधम-बाजी करता है। अभी एक क्षण में वह नाखूनों से तौलिया परे खींच लेगा और रास्ते में फाड़ कर डाल देगा, सिर हवा में ऊँचा उठा कर खड़ा रहेगा, दूसरे पल वह पड़ोसी के दूध का कल्याण कर देगा और सोफा

के नीचे दुबक जायगा, फिर वहाँ डर के कारण चिंचियाने-धूजने लगेगा। और पड़ोसी फिर बड़बड़ायेंगे—"बूढ़ा ७७ वर्ष का हो गया पर अब भी चैन नहीं लेने देता। ऐसा लगता है जैसे नाक में बर्र बैठी हुई हो।"

लेकिन इंसान लोहे का बना हुआ तो होता नहीं! पिछले वर्ष इनफ्लुएञ्जा की महामारी फैली तो बाबा भी शिकार हो गये। पूरे समय बाबा खाँसते रहते, फिर उन्हें जोर का टेम्परेचर हुआ और उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया।

इलाके की डाक्टर यूलिया पावलोव्ना को बुला भेजा गया। वह बादल की तरह उड़ती आई, श्याम-केशी युवती, नीला परिधान पहिने।

उसने हुक्म दिया—"साँस लो।"

बाबा ने साँस खींची और खाँसे।

"साँस खींचते रहो।"

वह साँस लेते रहे और खाँसते रहे। उनकी छाती से अजीब घुरघुर की आवाजें आने लगीं—पूरे कमरे में वह सुनी जा सकती थीं।

लेडी डाक्टर ने बाबा को देखा-भाला, फिर भौंहें सिकोड़ीं और सिर हिलाया।

बोली—"तो अब आप भी बीमारों में शुमार हो ही गये!"

ऐसा लगता था मानो बाबा को दोनों फेफड़ों में निमोनिया हो गया था, डबल निमोनिया।

यूलिया पावलोव्ना ने कहा—"पेनिसिलिन"।

बाबा के शरीर में पचास लाख लड़ाकों की फौज 'मेडिकल यूनिटस' दागी जाने वाली थी। हमें यह तभी मालूम हुआ जब केमिस्ट की दुकान से दवा लाई गई कि इसका क्या मतलब है। दवाई एक बक्स में थी जिसमें कई शीशियाँ थीं हरेक की तली में एक पीला-सा पाउडर

था। हर शीशी में दो (डाट) लगे थे, एक धातु का जो आसानी से निकल आता था और दूसरा रबर का।

रबर की डाट में एक तेज सुई से छेद किया गया और एक बेरंग तरल पदार्थ भीतर खींच लिया गया। इसमें कीटाणु मारने वाला पाउडर मिलाया गया और पूरी तरह घोल दिया गया। उसके बाद इस तरल पदार्थ को एक सिरिंज में भर लिया और वही लड़ाकों की पूरी फौज थी, एक लाख मेडिकल यूनिट--जो आदमी के शरीर में प्रवेश करने और उसके जीवन के लिए लड़ने की तैयार थी।

डाक्टर ने हुक्म दिया कि दिन-रात भर में हर तीसरे घंटे बाद ऐसे एक लाख लड़ाका शरीर में सुई के जरिये भेजे जाँय और सब मिला कर पचास लाख फौज बीमारी से लड़ने के लिए ठेल दी जाय।

हमें बाबा से हमदर्दी हुई, सो पूछा--"क्या इससे ज्यादा तकलीफ होगी ?"

डाक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया। वह फोन पर गई और दूसरे सिरे पर से बोलने वाले किसी व्यक्ति से देर तक बहस करती रही और अपनी बात मनवाने के लिए तर्क करती रही। वह अस्पताल की नर्सों क्लावदिया इवानोव्ना और इलेना कान्सतान्तीनोव्ना के नाम दुहराती रही। जब उसने बातचीत समाप्त कर ली, तब उसने हमारे उस प्रश्न का कि बाबा को तकलीफ होगी या नहीं उत्तर दिया।

उसने कहा--"हमारे यहाँ क्लावदिया इवानोव्ना नामक एक नर्स है--उसकी अंगुलियाँ ऐसी कोमल हैं--भाग्यशील स्पर्श--कि वह सोते हुए आदमी को इंजेक्शन दे दे और वह जान भी न पाये। वह अगले चौबीस घंटे व्यस्त है, पर हम उसका इन्तजार नहीं कर सकते; उसके स्थान पर इलेना कांस्तान्तीनोव्ना नामक नर्स शीघ्र ही आ जायगी। वह भी अच्छी नर्स है--कर्त्तव्यपरायणा और स्वच्छ। बस

रोगियों को उससे यह शिकायत रहती है कि उसके इंजेक्शन लगाते समय पीड़ा होती है। उसका हाथ पुरुष का सा है।"

पहिला इंजेक्शन यूलिया पावलोव्ना ने स्वयं तैयार किया और उसने इतने हल्के हाथों सुई लगाई कि जब वह लगा रही थी तो बाबा इस कारण या किसी और कारण से मुस्कराये। जब वह चली गई, तो वह हँसने लगे और बोले—"औरतें हमेशा औरतें ही रहेंगी।

हमने पूछा—"क्या मतलब आपका ?"

"लम्बे बाल, छोटी बुद्धि वह कहावत तो जानते ही होंगे। कल्पना करो एक ऐसे डाक्टर की—एक शिक्षित स्त्री की, जो भारयशील स्पर्श और कोमल अंगुलियों जैसी बकवास का जिक्र करती हो। किंतु यह कोमल या पुरुष-हाथों का प्रश्न थोड़े ही है। अरे, इसके लिए चाहिए दिमाग और कौशल। अगर इंजेक्शन लगाते समय तकलीफ होती है, तो साफ है कि नर्स अपना काम नहीं जानती और अगर तकलीफ नहीं होती तो वह सिद्धहस्त है।"

अपने दिमाग में अटकल लगाकर हमने कहा—"परवाह न करें बाबा, इलेना कान्सतान्तीनोव्ना तो सिर्फ सात इंजेक्शन ही देगी और एक आपको लग ही चुका है। सब मिलाकर ८ लाख लड़ाका ही तो होंगे और आपको कुल लगेंगे पचास लाख यूनिट। बाकी के सब क्लावदिया इवानोव्ना लगायेगी और उसकी अँगुलियाँ कोमल हैं !"

"कोमल ?" बाबा ने सहज सुभाव कहकहा लगाकर बोले—वह यह समझते थे कि हम स्वयं डाक्टर के मूढ़ विश्वास पर हँस रहे हैं।

पहिले इंजेक्शन के तीन घंटे बाद इलेना कान्सतान्तीनोव्ना आई और उसके आगमन के साथ ही ऐसा लगा मानो वहाँ की सब चीजों का ढर्रा ही बदल गया हो। अभी नर्स ने एक एंकल बूट उतार कर रखा था और दूसरा उतार रही थी कि झाल्का ने पहिला बूट झपट उठाया और

उसे लेकर नीचे भागा। इधर से उधर झिझोड़ रहा था और सिर हवा में ऊँचा उठाये हुए था। एक बूट पहिने ही नर्स ने उसका पीछा किया, वोलोद्या और मीशा उसके पीछे-पीछे दौड़े।

सामने के कमरे में झाल्का तब तक मेज के ओर-पास चक्कर लगाता रहा जब तक बच्चों ने उसे पकड़ कर उससे बूट छीन न लिया। इस धकापेल भाग-दौड़ में नर्स एक बार भी नहीं मुस्कराई और उसके पीले चपटे चेहरे पर गुस्से की लाल लकीरें उभर आईं। उसने कुत्ते को वहाँ से हटाने के लिए जिद की। झाल्का को बाँध दिया गया। अपनी बन्दी हालत में वह पूरे समय भूंकता रहा और पड़ोसी परेशान हो गये इस भौंकने से। पर बच्चों के लिए तो मुसीबत ही खड़ी हो गई। जब वह नर्स का बूट बचाकर ले आये तो उन्हें यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ उनको, "कैसे शरारती लड़के हैं" कह दिया गया।

अगले चौबीस घंटे में हर तीसरे घटे नर्स ने बाबा को एक लाख लड़ाकों का एक इंजेक्शन दिया। इंजेक्शन लगते समय बाबा अपनी आँखें मूद लेते और उनका चेहरा ऐसा लगता था मानो भूरी छोटी चुहिया उस पर दौड़ रही हो।

बाबा की हालत बद से बदतर होती गई। उनकी चमकीली आँखें बुझती-सी गई और वह उन्हें कभी ही खोलते थे।

नर्स ने उनसे कहा—"अलविदा, चंगे रहना।"

बाबा ने आँखें खोलीं, उसकी ओर देखा, फिर बिना कुछ कहे उन्हें बंद कर लिया। नर्स अब भी अपने चेहरे पर लाल उभरी नसें लिए चली गई।

उसके जाने के तीन घंटे बाद क्लावदिया इवानोव्ना आई। वह एक छोटे कद की स्त्री थी और वह अपनी आँखों से ही बड़े आकर्षक ढङ्ग से मुस्कराती थी—ऐसे मौके पर उसके कपोल भी इस हास्य-कृत्य

में सहायता देते प्रतीत होते थे। उन सुन्दर आँखों ने पहिली ही झलक में झाल्का को मोह लिया, वह उछला और उसने उस छोटी नर्स के होठों को करीब-करीब चूम ही लिया।

जब नर्स हाथ धो चुकी और सफेद गाउन पहिन लिया तो हम सब साथ-साथ बाबा के कमरे में गये, झाल्का हमारे साथ ही था। कुत्ते को देखकर बाबा मंद-मंद मुस्कराये और क्लावदिया इवानोव्ना की ओर ऐसे देखा, मानो उसे जानते हों।

क्लावदिया इवानोव्ना ने कितने लड़ाका सुई से भीतर भेजे और उन्होंने रोगी के जीवन के लिए किस प्रकार युद्ध किया यह सब डाक्टर के लिए एक कागज पर लिखा गया। इसमें इंजेक्शन, रोगी की नाड़ी की धड़कनों की संख्या और उसके टेम्परेचर का उल्लेख था।

बाबा ने स्वयं हमें बाद में बताया कि एक रात, ठीक उस दिन से पहिले जिस दिन उनके इंजेक्शन लगने वाले थे उन्हें लगा जैसे झाल्का दरवाजा कुरेद रहा हो। फिर कुत्ते ने दरवाजा खोल लिया और चुपचाप अन्दर आ गया। सब सो रहे थे और घर में इतनी शांति थी कि बाबा को फर्श पर कुत्ते के पंजों की खरखराहट भी सुनाई पड़ती थी। उनके बिस्तर के पास आकर शोर थम गया बाबा को अतीव आनन्द हुआ, पता नहीं क्यों।

उन्होंने कहा—"मुझे अपना पंजा दो।"

झाल्का ने अपना पंजा उनके बिस्तर पर रख दिया।

बाबा बोले—"दूसरा भी दो।"

झाल्का ने अपना दूसरा पंजा भी रख दिया और पिछले पैरों पर खड़ा हो गया।

और तब बाबा को ऐसा लगा, जैसा कि शिकारियों को सपने में लगता है, मानो जंगल में साधारण राहें नहीं हैं, साधारण फूल

नहीं है, बल्कि फूलों की झाड़ियाँ और उनका कुत्ता एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी तक दौड़ रहा था—ताजे फूलों के सागर में एक आलोकित प्रकाश में दूर-दूर तक जिसका कहीं अंत ही नहीं दिखाई दे रहा था—बस वह सब सुन्दर से सुन्दरतर होता जा रहा था।

पर शिकारी का यह उत्तेजक अनुभव एक पलक में बिजली की चमक की नाईं हुआ और छिप गया। बाबा ने यह समझ लिया कि ग्रीष्मकाल अभी बहुत दूर था और यह भी कि वह बीमार है और यह कि झालका ने अपनी ठन्डी नाक कम्बल के भीतर घुसेड़ दी थी और वह उसका शरीर अपनी गर्म जीभ से चाट रहा था। दूसरी चीज जो कुत्ता कर सकता था वह था बिस्तर में धँस पड़ना, हालांकि यह उसके लिए मना था और इसलिए बाबा चीखे—"निकल यहाँ से।"

जब वह जगे तो उन्होंने देखा क्लावदिया इवानोव्ना उनके बिस्तर के पास खड़ी अपनी स्नेहमयी आँखों से उनकी ओर मुस्करा रही है। वहाँ कुत्ते का तो नाम निशान भी नहीं था।

बाबा बोले—"माफ करना क्लावदिया इवानोव्ना, मैं सपना देख रहा था कि झालका मेरे बिस्तर में घुसना चाह रहा है। मेहरबानी करके इंजेक्शन लगाओ।"

"मैं लगा भी चुकी," क्लावदिया इवानोव्ना ने उत्तर दिया।

उसने इस प्रकार बिना दर्द पहुँचाये इंजेक्शन दिया कि बाबा को कुछ भी महसूस नहीं हुआ। वे मोहमय जंगल में जब अपने सपने में शिकार कर रहे थे तो एक काँटा भी नहीं चुभा। और उन्होंने इंजेक्शन को यह समझा मानो उनका कुत्ता अपनी गर्म जीभ से उनका शरीर चाट रहा हो।

किसी कारण से बाबा आनन्दातिरेक से भर उठे और उन्होंने नर्स का हाथ झकझोर डाला। बोले—"नर्स, प्रिय नर्स, तुम्हारी अँगुलियाँ बड़ी चतुर हैं।"

वही इंजेक्शन शायद था जिसने शत्रुदल को अन्ततः आत्म-समर्पण का सफेद झंडा लहराने पर विवश कर दिया और रोगी को स्वस्थ होने के लिए छोड़कर भाग गये। दूसरे दिन बाबा का लोगों के जीवन मे, वह चाहे कोई भी हो, दिलचस्पी फिर लौट लाई और क्लाव-दिया इवानोव्ना ने उन्हें अपने बारे मे सब कुछ बताया। पोलीक्लिनिक से वह कितना कमाती थी, रात्रिकालीन नर्स की हैसियत से काम करके वह कितना अतिरिक्त कमाती थी और वह अपनी कमाई किस प्रकार खर्च करती थी। ऐसा पता चला कि उसका पति युद्ध मे मारा गया था और अब उसके एक माँ थी और एक पुत्र। लड़के का नाम अन्द्रूशा था, आयु थी उसकी ६ वर्ष।

क्लावदिया इवानोव्ना ने कहा--"वह केवल ६ बरस का है, पर इतना चतुर है कि आप आश्चर्य किये बिना नहीं रह सकते।"

यह जतलाने के लिए कि वह कितना चतुर है उसने कहा कि प्रतिदिन जब वह काम से घर पर लौटती है तो वह उससे पूछता है कि वह कौन-सा ऐसा काम करे, वह क्या बने जिसके कारण वह अपनी माँ और नानी की सहायता कर सके।

बाबा बोले--"डाक्टर और क्या ?"

"यह तो वह स्वयं भी जानता है, पर वह प्रत्येक दिन कुछ नई बात सोच लेता है। डाक्टर, मेहनतकश, इंजीनियर और सब सम्भव पेशों के बारे में वह कह चुका है और आप जानते हैं कि उसने अभी उस दिन क्या कहा ?"

बाबा बोले--"मेरा ख्याल है हवाबाज ?"

"जी नहीं, यह तो वह कई बार बन चुका है। उसने कहा कि वह शासन-प्रबन्ध में पदाधिकारी होना चाहता है।"

बाबा ने पूछा--"क्या अडमिरल ?"

नर्स ने उत्तर दिया—"नहीं, शासन प्रबन्ध में पदाधिकारी ।" बाबा ने इस पर मुक्त हास्य बिखेरा और जब नर्स की ड्यूटी समाप्त हो गई, तो उन्होंने एक चित्रमय पुस्तक उठाई और उसके कवर के भीतरी पृष्ठ पर लिखा—

"प्रिय अन्द्रूशा, इस बारे में अधिक परेशान न रहो कि तुम्हें भविष्य में क्या बनना है। कुछ भी तुम बनो—डाक्टर, मेहनतकश, इंजीनियर, हवाबाज या शासन प्रबन्ध में पदाधिकारी—सदैव अपनी माँ के बारे में ध्यान रखना, उसके काम के ढङ्ग का अनुसरण करना—तुम प्रत्येक स्थान पर सानन्द रहोगे। हर कहीं लोग कहेंगे—अन्द्रूशा अपनी मां की ही नाईं कुशल, सिद्धहस्त है।"

पेनीसिलिन ने बाबा को इतना शीघ्र रोगमुक्त किया कि जब पड़ोसियों ने उन्हें देखा तो कहा—"आप तो बीमारी को वैसे ही सह लेते हैं जैसे पानी और बत्तख की पीठ।"

बाबा ने उत्तर दिया—"इसका बत्तखों से कोई वास्ता नहीं। यह तो आदमी का दिमाग है जो करतब दिखाता है। जरा सोचो तो अगर १९१० में यह दवाई होती तो लियो टॉल्सटॉय किसी दूरदराज और अनजान रेलवे स्टेशन पर निमोनिया से पीड़ित होकर मर जाते? कौन जाने वह महान व्यक्ति कितने और अधिक वर्षों तक जीवित बना रहता।"

नन्हा बाज

—विलियम सारोयन

नन्हें बाज से हमारा अभिप्राय किसी चिड़िया से नहीं है। वह एक छोटा-सा बालक था जिसके पैर बड़े फुर्तीले थे; उसका नन्हा-सा चेहरा हमेशा धूल से अटा रहता था और अपनी उम्र के कई दूसरे बच्चों की ही तरह उसके बाल सन जैसे थे। इसी वसन्त-ऋतु में वह पाँच वर्ष का हुआ था—इतने छोटे बच्चे के लिए यह उम्र काफी थी। सच पूछिये तो वानार्दजिस उसका असली नाम नहीं था। उसका नाम था जान, जार्तिस। उसके पिता के अलावा और कोई उसे वानार्दजिस नहीं कहता था।

समुद्र से वापस लौटने पर अपने भारी बूट उतार कर, पिता अपने नन्हें-से बेटे को उठाकर अपने घुटनों पर बिठा लेता था; उसके हाथों और जूतों की तरह उसके घुटनों से भी ताजी मछलियों और समुद्री काई की बू आती थी। मछली पकड़ने के जालों में, काली-काली मछहरों की नावों में और जिस कमरे में वे रहते थे, हर जगह से यही बू आती थी।

"कहो, मेरे नन्हें बाज, क्या हाल है ?" बाप बेटे को अपने घुटनों पर झुलाते हुए पूछता ।

और कभी-कभी वह छेड़ने के लिए बालक से पूछ लेता—"अच्छा, नन्हें बाज, यह तो बताओ, तुम किसके बेटे हो ? तुम कहीं वह नन्हें बाज तो नहीं हो जो खेतों में चूहे पकड़ता है ।"

बालक खिसियाकर अपने पिता के कपड़ों में अपना मुंह छुपा लेता और चुपके से कहता—"पापा, मैं तुम्हारा नन्हा बाज हूँ ।..."

और वे दोनों बड़ी देर तक साथ हँसते रहते । फिर बाप अपने बेटे के सर को अपने बड़े-बड़े लाल हाथों से सहलाता और उसे नीचे उतार देता ।

यह आश्चर्यजनक था कि उस खुरदुरे हाथ का स्पर्श भी कितना कोमल हो सकता था । उसके पिता की सूजी हुई गाँठदार उँगलियाँ वानादर्जिम के बालों से लीखें इतनी होशियारी और आसानी से निकाल लेती थीं कि बच्चे को जरा भी तकलीफ नहीं होती थी ।

वे दोनों बहुत अच्छे मित्र थे । और यह स्वाभाविक ही था क्योंकि उस छोटी-सी झोपड़ी में, जो मछुहरों की तमाम झोपड़ियों की अपेक्षा समुद्र के सबसे निकट थी, वे ही दो प्राणी रहते थे । किसी समय उस घर में तीन प्राणी थे । उसके पिता को तो उस समय की अच्छी तरह याद थी, पर वानादर्जिस को केवल इतना ही मालूम था कि उस झोपड़ी में रहने वाला तीसरा प्राणी उसकी माँ थी । उसकी समझ में माँ उन लोगों में से होती है जो अपने सिर पर रूमाल बाँधते हैं और उसके जैसे बच्चों को उँगली पकड़कर या गोद में उठाकर चलते हैं । गाँव के सभी छोटे-छोटे लड़कों-लड़कियों के उदार माँएँ थीं जो उनके गंदे मुंह साफ करती थीं और कभी-कभी उन्हें टहलाने भी ले जाती थीं । पर उसका केवल बाप ही था—एक बड़ा-सा सच्चा मित्र जो उसे घुटनों पर बिठाकर झुलाता था और कभी-कभी अपने कंधों पर बिठाकर खाड़ी

से घर तक लाता था। वह उन लोगों से किसी भी प्रकार बुरा नहीं था जो अपने सिर पर रूमाल बाँधते थे। और वह उन सबमें लम्बा और ताकतवर भी था—वानादर्जिस ने स्वयं अपने बाप को अकेले अपने बूते पर मछली पकड़ने की एक भारी नाव को ढकेल कर पानी में उतारते देखा था।

जब कभी उसका बाप मछली के बहुत लम्बे शिकार को जाता—और ऐसा बहुधा बसंत में होता था—वह वानादर्जिस को गाँव में उसकी चाची ऐनी के यहाँ रात भर के लिए छोड़ आता था। उस घर में और भी छोटे-छोटे लड़के और लड़कियाँ थीं पर वानादर्जिस को ऐसा लगता था कि उसकी चाची उसी के साथ सबसे अच्छा व्यवहार करती थी। बच्चे खेल खेलते थे, कूद-फाँद मचाते थे और रात को साथ-साथ खाना खाते थे।

वहाँ बड़ा आनंद था, पर वानादर्जिस फिर भी अपने घर को ही सबसे अच्छा स्थान समझता था, यद्यपि वहाँ खेल कूद के लिए उसकी एकमात्र सङ्गिनी मिनका नामक बिल्ली थी जो हमेशा उससे कही गयी बात को समझती भी नहीं थी। वानादर्जिस एक रस्सी का टुकड़ा लेता और उसके एक सिरे पर छोटी-सी लकड़ी की खपच्ची या चिथड़ा बाँध कर कमरे में भागता और फिर मिनका क्या-क्या नहीं करती थी। वह कोने में दुबककर बैठ जाती मानो जमीन से उसे चिपका दिया गया हो और रस्सी से बँधी हुई गतिशील वस्तु को देखती रहती। मिनका की हरी आँखों से चिनगारियाँ भी निकलने लगती और फर्श को अपनी दुम से जोर-जोर से पीटकर वह सिमटकर बिल्कुल गेंद बन जाती और फिर एक लम्बी छलाँग मारती। मूर्ख मिनका शायद समझती कि रस्सी के सिरे पर बँधी हुई चीज कोई जीवित प्राणी है। जब वह खेलते-खेलते थक जाती तो वह गुर्राने लगती, वानादर्जिस के कदमों के पास कलाबाजियां खाने लगती और उस बालक को इतनी चातुर्यपूर्ण दृष्टि से देखने लगती मानो कह रही हो, "बस, अब हम लोग बहुत खेल चुके।"

मिनका सचमुच बहुत चालाक थी। शाम को जब वानादर्जिस के पिता का मछलियां वापस लेकर लौटने का समय होता तो वह भी उस मछहरे का स्वागत करने के लिए बालक के साथ दौड़कर किनारे तक जाती। जहां उनकी नाव आमतौर पर लंगर डालती थी, वहां बैठकर मिनका बड़े धैर्य के साथ समुद्र की ओर देखती रहती। ज्यों ही मछहरे तट पर आते, वह अपनी कमर झुकाकर और दुम मोमबत्ती की तरह सीधी तानकर वानादर्जिस के बाप के पैरों पर लोटने लगती। वह भली भांति जानती थी कि मछहरे कभी खाली हाथ नहीं लौटते और उसे अवश्य ही कुछ छोटी मछलियां मिलेंगी। यह जीवन भी कितना सुखी और आनंदमय था!

गर्मियों में जब सूरज तेजी से चमकता था और जाल मरम्मत करके सूखने के लिए बेंध पर फैला दिये जाते थे तो और भी मजा आता था। तब वानादर्जिस सारा दिन तट पर ही बिता सकता था। हर चीज को सूंघते हुए मिनका बार-बार नाव का चक्कर लगाती और फिर बेंच पर आराम से दुबककर सुख की नींद सोती। वानादर्जिस रेत के घरौंदे बनाता। उसका बाप जल्दी-जल्दी बड़ी होशियारी से जालों की मरम्मत करता। बीच-बीच में वह अपना काम छोड़कर रेत पर अपने बेटे के पास आकर बैठ जाता।

"अच्छा, वानादर्जिस, तुम क्या बना रहे हो?" वह पूछता।

और वानादर्जिस उसे बताता—"इस छोटे-से घर में तो वे रहते हैं और यह बड़ा वाला घर गोदाम है।....."

वह अपनी बिल्ली मिनका के लिए भी एक घर बनाने की योजना रखता था।

कभी-कभी उसके पिता की दृष्टि गंभीर चिंतन के भाव से समुद्र पर विचरने लगती; वानादर्जिस को अपने निकट खींचकर वह दूर संकेत करता जहाँ जल क्षितिज से मिल जाता था।

"वानादर्जिस, भला तुम जानते हो कि वहां क्या है ?"

वानादर्जिस जानता तो नहीं था, पर वह जानना जरूर चाहता था। बालक के कंधे पकड़कर उसका पिता उसे अपने सीने से लगा लेता।

"किसी दिन आगे चलकर जब मेरे नन्हे बाज के पर निकल आयेंगे, तब वह स्वयं उड़कर वहाँ जायेगा और देखेगा कि वहाँ क्या है। शायद वह वापस आकर अपने पिता को सब कुछ बतायेगा कि उसने वहाँ क्या देखा और शायद..." यहाँ पहुंचकर पिता की आवाज लड़खड़ाने लगती और खोखली मालूम होने लगती और वह उदास मुस्कराहट के साथ कहता, "और कौन जाने शायद वह कभी लौटकर न आये....।"

उनका जीवन इसी प्रकार व्यतीत होता था। शायद दूसरे लोग उनसे अच्छा जीवन व्यतीत करते हों या अधिक प्रसन्न रहते हों, पर वानादर्जिस को इसका ज्ञान नहीं था। और शायद उसके पिता और मिनका को भी ऐसा ही लगता था।

शरद् ऋतु आयी। अब समुद्र का पानी इतना गर्म नहीं रह गया था कि वह बालक अपनी पतलून ऊपर चढ़ाकर उथले पानी में उतर जाये। कभी-कभी हवा के झक्कड़ चलते और प्रबल लहरें इस वेग से तट की ओर झपटती मानो हर चीज को अपने साथ समुद्र में बहा ले जायेंगी। इन मौकों पर मछुहरे अपनी नावों को रेत पर और आगे तक खींच लाते। अब वानादर्जिस तट पर घूम कर सुन्दर सीपियां नहीं बटोर सकता था। जहाँ तक मिनका का सवाल था, तो वह कोम-लांगी, जिसे दुनियाँ में सबसे ज्यादा डर इस बात से लगता था कि कहीं उसके सफेद पंजे न भीग जायें, ऊँचे-ऊँचे तटबंधों की पंक्ति से आगे बढ़ने का साहस नहीं करती थी।

ऐसे दिनों में उसका पिता कभी समुद्र पर नहीं जाता था और वानादर्जिस तथा मिनका को खाड़ी के तट पर किसी को प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी।

परन्तु एक दिन हर चीज ने ऐसा पलटा खाया कि सारी परिस्थिति ही बदल गयी। खाने से पहिले किसी बुरी बात का चिह्न नहीं था : आकाश स्वच्छ था और समुद्र शांत था; क्षितिज पर कहीं केवल एक हल्का-सा बादल धीरे-धीरे बढ़ रहा था।...उसके पिता से उनका एक साथी मिलने आया और उन्होंने फैसला किया कि उन्होंने कल जो जाल सूखने के लिए फैलाये थे, उन्हें अगर समुद्र में डाल दिया जाये तो कोई हर्ज न होगा। बहुत ज्यादा मछलियाँ फँसने की आशा थी : उससे पिछली रात को दूसरे मछहरे बहुत-सी मछलियाँ पकड़कर लाये थे।

उन दोनों मछहरों ने बल्लियों पर से जाल उतार लिए और लंगरों का पता लगाकर सारा सामान नावों पर लाद दिया।

शिकार पर जाने से पहले वानादर्जिस का पिता उसे घर ले गया और रोटी का एक बड़ा-सा टुकड़ा काटकर उस पर मक्खन लगाकर रसोईघर की अलमारी में रख दिया।

"जब भूख लगे तो अलमारी खोलकर यह खा लेना, उसने कहा। "तब तक मिनका के साथ खेलना और तट पर न जाना। मैं जल्द ही लौट आऊँगा।"

यह कहकर वानादर्जिस का पिता चला गया। बड़ी देर तक वानादर्जिस खिड़की पर से उसे देखता रहा; उसने नाव को तट से दूर जीते देखा, नाव छोटी होती गयी और आखिरकार बिल्कुल अदृश्य हो गयी। अब वानादर्जिस की दिलचस्पी की कोई चीज देखने को नहीं रह गयी थी इसलिए वह खिड़की के पास से हट आया। उसे एक रस्सी

का टुकड़ा मिल गया जिसमें एक चिथड़ा बँधा हुआ था और वह अपने मित्र के साथ खेलने लगा।

"पकड़ो मिनका, पकड़ो ! आओ थोड़ी देर खेल लें फिर हम लोग पिताजी को लेने समुद्र तट पर भागकर चलेंगे।"

वे दोनों खेल में इतने मग्न थे कि उन्हें पता भी नहीं चला कि समय कब बीत गया; जब वे थक गये तब उन्होंने खेलना बंद कर दिया। वानादजिस एक कुर्सी पर चढ़कर समुद्र की तरफ देखने लगा; शायद उसके पिता आते हों। पर नाव कहीं दिखाई नहीं दी। जिस समय वे खेलने में व्यस्त थे समुद्र ने एक गहरा सुरमई रङ्ग धारण कर लिया था। बड़ी-बड़ी लहरें, जिनके ऊपर सुरमई रङ्ग का झाग था, तट पर थपेड़े मार रही थीं। गरजती और हुंकारती हुई हवा बाँधों की मिट्टी को काटे दे रही थी और तूफानों से विकृत छोटे-छोटे पीड़ के वृक्षों को जमीन तक झुकाये दे रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उन्हें हिलाकर झुका दिया हो। वानादजिस जानता था कि पेड़ों का इस प्रकार हिलना अशुभसूचक था। ऐसी दशा में उसका बाप बहुधा कहा करता था : "मौसम खराब होता जा रहा है, तूफान आयेगा और मछहरों के लिए सब से अच्छा यही होगा कि वे घर पर ही रहें।" वानादजिस जानता था कि जब मछहरे समुद्र में तूफान में घिर जाते हैं तब वे जल्दी-जल्दी घर लौट आते हैं। इसका अर्थ था कि उसके पिता भी शीघ्र ही लौट आयेंगे।

पर नाव नहीं आयी। गोधूलि वेला रात्रि में विलीन होती जा रही थी। अब उसके लिए यह पता लगाना भी कठिन था कि क्षितिज पर समुद्र कहां समाप्त होता है और आकाश कहाँ आरंभ होता है। हवा प्रतिक्षण तेज होती जा रही थी, हवा का झक्कड़ झोपड़ी की छत को उड़ाये ले जा रहे थे। अब तो उसके पिता को आ ही जाना चाहिए था; पर उसे इतनी देर क्यों लग रही थी ?···"

वानादर्जिस ने अपने सर पर टोपी मढ़ ली और बिना कोट पहिने ही घर से भागता हुआ निकला; उसके शरीर पर एक कमीज के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इसकी प्रतीक्षा किये बिना कि उसे बुलाया जाये, मिनका भी उसके पीछे भागी। बिल्ली भी जानती थी कि उसके मालिक के लौटने का समय हो गया था और अब तक उसे कुछ ताजी मछलियाँ खाने को मिल जानी चाहिए थीं।

इतनी तेज हवा के खिलाफ तट की ओर जाना बहुत कठिन था; हवा के झोंके बालक के चेहरे पर सीधे लग रहे थे और उसके लिए पाँव जमाना भी कठिन हो रहा था। उसके पिता की नाव न कहीं तट पर दिखायी दे रही थी और न समुद्र पर। सच तो यह है कि समुद पर कोई चीज देख पाना असम्भव था। गरजता हुआ जल-विस्तार अंधकारमय और भयावह था। पर उसे अपने पिता का इन्तजार करना ही था; वह किसी भी क्षण आते होंगे; वह ऐसी हालत में समुद्र पर क्या करेंगे ? अगर वह बहुत समय के लिए गए होते तो वह वानादर्जिस को जरूर गांव में उसकी चाची के यहाँ छोड़ आते। उन्हें आज ही लौट आना चाहिए।

वानादर्जिस बेंच पर बैठकर, जहाँ जाल फैले हुए थे, अपने पिता की प्रतीक्षा करने लगा। सूरज बहुत देर हुए डूब चला था और जहाँ कहीं बादल फट गए थे मद्धिम सितारे दिखाई दे रहे थे। शरद् ऋतु के आरम्भ की रात्रि का आगमन हो चुका था पर वानादर्जिस अभी तक बेंच पर बैठा हुआ था; उसकी नजरें समुद्र पर जमी हुई थीं जो अँधेरे में तारकोल से भी ज्यादा काला दिखाई दे रहा था। वह कान लगाकर चप्पुओं की आवाज सुनने का प्रयत्न कर रहा था पर हरहराती हुई हवा और गरजती हुई लहरों के शोर में उसे कुछ भी सुनाई न दे सकता था।

वानादर्जिस का जी घर जाने को नहीं हो रहा था; वहाँ भी अँधेरा ही था और कोई लैम्प जलाने वाला भी नहीं था। वह इतना छोटा था कि खुद लैम्प नहीं जला सकता था।

बड़े करुण ढङ्ग से म्याऊँ-म्याऊँ करते हुए, मानो मिनका कोई प्रश्न पूछ रही हो, उसने अपने बाल वानादर्जिस के पैरों से सटा दिये। वह फिर म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी और जब उसकी प्रार्थना का कोई उत्तर न मिला तो वह चुप-चाप घर की ओर चल दी। मिनका प्रतीक्षा करते-करते उकता गयी थी। "जाने दो", वानादर्जिस ने सोचा, "इसी को मछली नहीं मिलेगी।..." पर वह तो अपने पिता को लौटने तक प्रतीक्षा करता रहेगा। बालक सोच रहा था कि पिता आकर जरूर उसे गोद में उठाकर घर ले जायेंगे। पर वह आते क्यों नहीं? शायद वह बहुत दूर चले गए, समुद्र के पार, यह मालूम करने के लिए कि वहाँ क्या है, तो वह वापस आकर मुझे बहुत-सी रोचक बातें बतायेंगे। उस नन्हें बाज का बहुत जी चाहता था कि जाकर देखें कि जहाँ समुद्र आकाश को छूता है, वहाँ क्या होता है। उसे बड़ा खेद था कि वह इतना छोटा था और उसे अपने पंख उगने के लिए बहुत समय तक प्रतीक्षा करनी होगी।

रात्रि के अन्धकार में हवा पागलों की तरह गरज रही थी, उद्विग्न समुद्र कराह रहा था और बाँध के किनारे वाला वह छोटा-सा अकेला घर अन्धकार और सर्दी में खड़ा था।

वानादर्जिस को घर ले जाने के लिए कोई नहीं आया; उसे बुलाने के लिए आता भी कौन। वह कहाँ बैठा रहा; बालक ने अपने ठिठुरते हुए पैर जाल के नीचे सरका दिए और बड़े धीरज के साथ अपने पिता की प्रतीक्षा करने लगा।

हंसों की झील

—आन्द्रेई ईवानोव

चिमित की आंख सबसे पहले खुली। उसने अपना सर उठाकर चारों तरफ देखा। अलाव बुझ गया था। आस-पास के लार्च के पेड़ काली परछाइयों की तरह निश्चल खड़े थे। केवल आकाश का रङ्ग धीरे-धीरे सुरमई होता जा रहा था और डूबते हुए सितारे झिलमिला रहे थे।

"सुबह हो गयी। शीघ्र ही सारे टैगा में पौ फूटने लगेगी।" उसने दबी जबान में कहा।

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

लड़का दृढ़ निश्चय के भाव से उठकर खड़ा हो गया; अपने थैले के पास जाकर उसमें से उसने साबुन की एक बट्टी, अपना तौलिया और एक केतली निकाली और सीटी बजाता हुआ झाड़ियों के पीछे छुपे हुए चश्मे की तरफ चल पड़ा। वहां उसने हाथ-मुंह धोया और थोड़ा-सा पानी साथ लेता आया। फिर उसने आग सुलगायी और केतली उस पर चढ़ा दी।

नाचती हुई लपटों में लड़के का चेहरा चमक उठा। वह लगभग चौदह वर्ष का था। उसके दुबले-पतले चेहरे पर बड़ी-बड़ी गहरे बादामी रङ्ग की आंखें घनी काली भंवों के नीचे और भी बड़ी मालूम होती थीं। उसके काले घने बालों में एक तरफ को माँग निकली हुई थी।

आग जलाने के बाद उसने मातवेई और बादी नामक उन दो लड़कों को भी जगा दिया जो बर्च वृक्ष की टहनियों का बिछौना बनाकर उस पर सो रहे थे।

"और आर्त्योम साजोनोविच कहाँ हैं?" मातवेई ने झट से उठते हुए पूछा।

"मैं तो कब का जाग गया और तुम लोगों के जागने की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं मुंह-हाथ भी धो चुका, जंगल के बूढ़े रखवाले ने, जो पास ही जमीन पर लेटा हुआ था, उत्तर दिया "जल्दी से नाश्ता कर लो, तब हम लोग झील पर चलेंगे।"

और वह बिना किसी कठिनाई के उठ खड़ा हुआ उसका कद लम्बा, हाथ बड़े-बड़े, और बाल सफेद थे; उसके एक घनी मटीले लाल रङ्ग की मूंछ भी थी। कई बरसों की तपती हुई धूप और मूसलाधार वर्षा में उसका रङ्ग काला पड़ गया था पर उसकी खाल पर वयस्कता के कोई चिन्ह नहीं थे। बस वह मजबूत और मोटी होती गयी थी।

उन्होंने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया, आग बुझा दी और अपने रास्ते पर चल पड़े।

वे सूर्योदय से पहले ही झील पर पहुँच गए। झील के पानी पर कुहरे की एक मोटी चादर-सी पड़ी हुई थी।

पास ही कहीं कोई चिड़िया चीख उठी, कुछ इस प्रकार: क्लक-क्लू, क्लक-क्लू, क्लक-क्लू। फिर वह इससे भी ऊंचे स्वर में बोलने लगी और उसकी बोली में अच्छा खासा संगीत का पुट आ गया।

"चिड़िया कहीं पास किनारे पर ही है," चिमित ने कहा।

लड़के पानी के किनारे झुण्ड बांधकर खड़े हो गए।

"बैठ जाओ।" आर्त्योम साजोनोविच ने आवाज दबाकर सहसा आज्ञा दी और बच्चों को हनीसकिल की झाड़ी के पीछे खींच लिया।

एक बड़ा-सा हंस, जिसकी गरदन बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से मुड़ी हुई थी, एक छोटे-से द्वीप के पीछे-से तैरता हुआ आया और उसने सतर्क नेत्रों से दायीं-बायीं तरफ देखा। और जब उसने देख लिया कि आस-पास कोई खतरा नहीं है, तो उसने केवल अपनी गरदन ही नहीं, बल्कि अपना गर्वीला उभरा हुआ सीना भी तान लिया और ठहर गया; फिर उसने एक बार अपने मजबूत पंख फड़फड़ाये और तेजी से घूमकर एक जगह पर स्थिर खड़ा हो गया।

बालहंसों का एक झुण्ड, जो पिछले साल ही पैदा हुए थे; तैरता हुआ झील के बीच में आया, जहां वे शोर मचाकर खेलने लगे और एक दूसरे के पीछे भागने लगे।

काफी समय बीत गया था। सूरज काफी ऊपर चढ़ आया था, पर बड़ा हंस बिल्कुल भी नहीं हिला मानो ऊंघ रहा हो।

सहसा बालहंसों मे भय के चिन्ह दिखायी पड़ने लगे। पहले तो वे तितर-बितर हो गए फिर मानो किसी आज्ञा का पालन करते हुए वे फिर झुण्ड बाँधकर एक जगह एकत्रित हो गए।

पहले हंस ने अपनी गरदन बाहर निकालकर झील पर चारों ओर नजर दौड़ायी और सशंक नेत्रों से द्वीप की तरफ देखने लगा।

झील के धरातल पर एक बड़ी-सी परछाईं तैरती हुई आगे निकल गयी। हंस ने अपना सर उठा, कई बार अपने पंख फड़फड़ाकर बहुत-सा पानी उछाला और द्वीप की दिशा में देखते हुए जोर की सीटी जैसी आवाज पैदा की।

आकाश की तरफ देखते हूए वह तैरता हुआ द्वीप की तरफ गया पर वह किनारे से आगे नहीं बढ़ा बल्कि पानी में ही रहा।

परछाईं एक बार फिर पानी पर से निकल गई।

"वह देखो, गिद्ध।" चिमित ने सारी सतर्कता भूलकर झाड़ी के पीछे से चिल्लाकर कहा।

हंस उस बड़ी-सी काली चिड़िया को देख रहे थे जो झील पर मँडला रही थी। लड़कों ने देखा कि गिद्ध बालहंसों के झुण्ड के ऊपर नहीं बल्कि द्वीप के ऊपर मंडला रहा था। जाहिर था कि वह पानी के धरातल पर चिड़ियों पर हमला करना नहीं चाहता था; वह ठोस जमीन पर किसी शिकार की तलाश में था।

ऐसा प्रतीत होता था कि बूढ़े हंस को इस बात का ज्ञान था। वह घबराया हुआ इधर-उधर तैर रहा था और जोर की सीटी जैसी आवाज पैदा कर रहा था। बार-बार वह अपने मजबूत पंखों से पानी छपछपाकर बहुत-सा पानी उछाल देता था।

"अरे, गिद्ध उसे पकड़ लेगा, वह छुप क्यों नहीं जाता?" मात-वेई ने चिन्तित स्वर में कहा।

"वह अपने घोंसले और अपनी मादा की रक्षा कर रहा है, इसीलिए वह गिद्ध का ध्यान उधर से हटाना चाहता है," आर्त्योम साजोनोविच ने समझाते हुए कहा।

बूढ़ा हंस हवा में उड़ा और उसने एक करुण चीत्कार किया। गिद्ध की उड़ान की तुलना में हवा में उसकी गति धीमी और भद्दी थी।"

"उसे यह नहीं करना चाहिए था, आर्त्योम साजोनोविच ने घबराहट में हनीसकिल की उस झाड़ी की एक टहनी तोड़ ली, जिसके पीछे वे छुपे हुए थे और झुंझलाकर कहा-"हवा में गिद्ध अधिक तेज और ताकतवर होता है।"

इस बीच में हंस ने बड़े भद्दे ढङ्ग से दो-एक बार पंख और मारे और फिर पानी पर आ उतरा।

"उसका दम फूल गया," मातवेई ने तिरस्कार के भाव से कहा।

"नहीं, वह कायर नहीं है," चिमित ने हंस का पक्ष लेते हुए कहा-"बस उसे अपनी गलती का आभास हो गया है। पानी में वह ज्यादा सुरक्षित है।"

"नहीं, यह तुम्हारी भूल है। अब तो वह केवल अपनी मादा को बचाना चाहता है," जंगल के रखवाले ने कहा। "वह गिद्ध को अपनी तरफ खींचकर लाना चाहता है।"

पर गिद्ध अभी तक पानी में शिकार करने से हिचकिचा रहा था क्यों कि द्वीप पर उसके सामने एक शिकार मौजूद था। गिद्ध ने अपने पङ्ख मोड़ लिये और बिजली की तरह झपटा।

हंस भी करुण क्रन्दन करता हुआ द्वीप की ओर झपटा।

बच्चे झाड़ी के पीछे से उठ खड़े हुए थे और दम साधे यह सब कुछ देख रहे थे।

जब गिद्ध फिर से घास और झाड़ियों के ऊपर आया और उसके पन्जों में कोई शिकार नहीं दिखायी दिया, तो सब ने संतोष की सांस ली। शायद हंस की मादा घनी झाड़ियों में छुप गयी थी या वह पानी में गोता मार गयी थी। रोषपूर्ण चीख मारकर गिद्ध ऊपर उड़ा और आकाश में एक छोटा-सा चक्कर लगाकर सीधे बूढ़े हंस पर झपटा।

जिस जगह पर हंस तैर रहा था, वहां पानी में बहुत जोर का छपाका हुआ। गिद्ध पागल होकर पानी को अपने पङ्खों से छपछपा रहा था।

"उसने हंस को बुरी तरह जकड़ लिया है," जंगल के रखवाले ने चिन्तित स्वर में कहा-"वह अब उसका काम तमाम कर देगा।" वह गिद्ध को भगा देने के लिए चिल्लाने ही वाला था कि चिमित हर्ष से चिल्ला उठा :

"देखो हंस कहां पहुंच गया!"

हंस गिद्ध से बहुत पीछे था। जब उसने गिद्ध के झपटने की आवाज सुनी तो उसे डुबकी मार जाने का अवसर मिल गया और गिद्ध सीधे पानी पर झपटा।

पहले हमले से बच जाने के बाद अब बूढ़ा हंस अपने आपको आसानी से बचा सकता था। और फिर इसकी संभावना कम ही थी कि गिद्ध भीग जाने के बाद शिकार जारी रखेगा। पर हंस का छुप जाने का कोई इरादा न था। वह तैर कर गिद्ध के पास गया, उसके एक पङ्ख का सिरा अपनी चोंच में दबाया और तेजी से उसे द्वीप के पास से खींच लाया।

इतने में दो द्वीपों को अलग करने वाली पट्टी में एक दूसरा हंस दिखायी दिया। जब उसने अपने पड़ोसी को एक गिद्ध से झूझते हुए देखा, तो एक क्षण तो वह वहीं ठहरा रहा पर शीघ्र ही वह भी इस लड़ाई मे कूद पड़ा, जिसे देखकर बच्चों को बड़ी खुशी हुई। वह तैरा नहीं और उड़कर अपने साथी की मदद को पहुंच गया। वह पानी पर उतरा और उन उड़ती हुई चिड़ियों के गिर्द चक्कर काटने लगा। जब वह गिद्ध के बिल्कुल निकट आ गया तो गिद्ध ने अपने उस पङ्ख से, जो अभी तक आजाद था, उस पर भरपूर वार किया। दूसरा हंस हट गया और सिसियाने लगा, मालूम नहीं क्रोध से या पीड़ा से। लेकिन वह फिर लड़ाई में कूदा और फुर्ती से गिद्ध का सिर पकड़कर उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। गिद्ध ने जोर से झटका देर बड़ी कोशिश के बाद उसे अपनी पीठ पर से हटा दिया, पर उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी।

पहला हंस अभी तक गिद्ध के पंख का शिरा पकड़े उसे खींच रहा था। दूसरे हंस ने फिर प्रहार किया। और अपने शत्रु की गरदन पकड़कर उसका सर पानी में डुबो दिया और उसकी पीठ पर बैठकर उसे पूरी तरह डुबा देने का प्रयत्न करने लगा।

कुछ ही मिनटों में सारा किस्सा खत्म हो गया । गिद्ध कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। झील के धरातल पर केवल कुछ भूरे रंग के पर तैर रहे थे।

हमें मालूम नहीं कि इन हंसों को पहले से शिकारी चिड़ियों से लड़ने का कोई अनुभव था नहीं, या यह उनकी पहली मुठभेड़ थी। लेकिन यह तो मानना ही पड़ेगा कि इन शान्तिपूर्ण चिड़ियों ने संकट की घड़ी में एक दूसरे की सहायता से घातक शत्रु को परास्त किया था। बड़ी सद्भावना के साथ एक दूसरे को देखकर विजयध्वनि करते हुए दोनों हंस तैरते हुए अपने-अपने द्वीपों की तरफ चल दिए।

पहला वाला हंस किनारे पर चढ़ गया और बड़े गर्व के साथ ऊँचे-ऊँचे कदम उठाता हुआ अपनी मादा को ढूँढ़ने के लिए आगे बढ़ा। उसकी चाल-ढाल में इतना गर्व था कि उसे देख कर यह विचार होता था कि मानों गिद्धों को मारना जन्म से ही उसका पेशा रहा हो।

"आओ चलें, उनके विजयोल्लास में हमें विघ्न नहीं डालना चाहिये," जंगल के रखवाले ने कहा और सबसे घर लौट चलने को कहा।

रास्ते में एक जगह रुक कर वे हंसों की झील और उस दंभी गिद्ध की मृत्यु की बातें करने लगे।

'क्या हंस यहाँ बहुत दिनों से रहते हैं ?" चिमित ने पूछा।

"नहीं, अभी थोड़े ही दिनों से रहते हैं," आर्त्योम साजोनोविच ने उत्तर दिया। "कुछ वर्ष पहिले यहाँ झील के पास एक जंगल का रखवाला रहता था। वह नौजवान था यद्यपि वह अकेला ही रहता था, पर वह कभी खाली नहीं बैठता था। उसके पास हमेशा कुछ-न-कुछ करने को रहता ही था। और जब आदमी इस प्रकार व्यस्त रहता है, तो उसे अच्छा लगता है। और वह एकान्त अनुभव नहीं करता।

यहाँ आस-पास जो असंख्य पशु-पक्षी रहते थे वे उसे जानते थे और उससे डरते नहीं थे। वसन्त ऋतु के दिन कोलाहलमय होते थे क्योंकि चिड़ियाँ सूर्योदय से सूर्यास्त तक गाती रहती थीं। गर्मियों में जीवन का ढर्रा बिल्कुल ही बदल जाता था, सब लोग अपने-अपने काम में व्यस्त हो जाते थे। सारे पशु-पक्षी अपनी मांदें और घोंसले बनाने में लग जाते थे। शरद ऋतु में धीरे-धीरे सारा शोर मंद पड़ता जाता था; चिड़ियां उड़ जाती थीं और पशु टैगा के जंगलों में बहुत अन्दरजाकर छुप जाते थे।

"लेकिन एक शरद ऋतु ऐसी थी जो जङ्गल के उस रखवाले को आज तक याद होगी। उस शरद ऋतु में झील के धरातल पर एक हंस उतरा। वह बहुत बीमार था और उसके पंख बुरी तरह झुक गए थे। वह किसी को पास नहीं आने देता था और तट से दूर ही रहता था।

"फिर जाड़े शुरू हो गए और झील का पानी जमने लगा।

"हंस की हालत बहुत बुरी थी। वह अपने झुके हुए बायें पंख के साथ एक ही स्थान पर जमा रहता था।

"अन्त में जङ्गल के रखवाले ने नाव द्वारा उसके निकट जाने का निश्चय किया। हंस टस से मस न हुआ। स्पष्ट था कि उसकी मृत्यु निकट थी। जङ्गल के रखवाले ने बड़ी सावधानी से उसे उठा कर अपनी नाव में रख लिया। आँखें भी ठीक से नहीं खुल पाती थीं; उसके पूरे शरीर में आँखों में ही कुछ जान मालूम होती थी।

"जब जङ्गल का रखवाला उसे घर लाया और उसके पङ्ख का निरीक्षण किया तो उसके नीचे उसे एक बड़ा-सा पीला फोड़ा दिखाई दिया जो एक पर के अन्दर की तरफ बढ़ जाने के कारण हो गया था।

"जङ्गल के रखवाले ने वह पर नोच लिया और फोड़े का मुँह खोल दिया। पंछी फड़फड़ाने लगा। लेकिन जब जंगल के रखवाले ने

उसके घाव पर आयडीन लगायी तो हंस छटककर अलग हो गया और एक बेंच के नीचे जा छुपा।"

"सबेरे जङ्गल का रखवाला हंस के लिए थोड़ी-सी मछली छोड़कर अपने काम पर निकल गया। हंस ने मछली खायी पर वह अपने शरण-स्थान से बाहर नहीं निकला। धीरे–धीरे वह अपने आस-पास के वातावरण का आदी होता गया। वह बेंच के नीचे बैठे-बैठे अपनी गरदन अपनी गरदन बाहर निकालने लगा और आखिरकार वह उसके नीचे से निकलकर कमरे में आया। वह जलती हुई अंगीठी की तरफ गया और बड़ी देर तक लपटों को घूरता रहा। एक बार वह पानी के पीपे में चढ़ गया और सारा पानी फर्श पर फैला दिया। इसके बाद जङ्गल का रखवाला एक लम्बी-सी नांद में उसके लिए पानी छोड़कर जाने लगा।

"वसन्त ऋतु फिर लौट आयी। एक दिन जब जङ्गल का रखवाला घर लौटा तो उसने हंस को मेज पर खड़े होकर खिड़की के बाहर देखते पाया। उसका ध्यान मिट्टी या पिघलती हुई बर्फ की ओर आकर्षित नहीं था। वह अपनी गरदन तानकर सर ऊपर उठाये नीले आकाश और सफेद बादलों को देख रहा था। उस दिन के बाद से जङ्गल का रखवाला हंस को बहुधा खिड़की के पास वाली मेज पर ही बैठा पाता था।

"इस प्रकार उसने वसन्त के अन्त तक हंस की देखभाल की; उस समय तक सारी चिड़ियाँ लौट आयी थीं; उन्होंने अपने घोंसले बना लिए थे और वे अपने बच्चों को खिलाने-पिलाने में व्यस्त थीं। तब जङ्गल के रखवाले ने अपने बंदी को मुक्त कर दिया। पंछी दरवाजे से निकलकर हरी-भरी घास पर आया, एक दृष्टि आकाश की ओर डाली फिर एक बार पानी की तरफ और सहसा जोर से चिल्ला पड़ा। इस

प्रकार वह दो बार से अधिक नहीं चिल्लाया होगा पर जङ्गल के रखवाले को उसका यह स्वर जिंदगी भर याद रहेगा हंस की उस पुकार से उसे अनुमान हुआ कि इस विलक्षण जगत् में वापस लौट आने का उसे कितना हर्ष था और साथ ही इतने समय तक उस वातावरण से दूर रखे जाने पर उसे कितना क्रोध था।

"हँस ने वहीं अपना घर बना लिया और सारी गर्मियाँ वहीं झील पर बिता दीं। शरद् ऋतु में वह भी सभी साइबेरियाई हँसों की तरह दक्षिण की तरफ उड़कर जाने वाली चिड़ियों के एक झुण्ड के साथ हो लिया।

"अगली वसन्त ऋतु में जब चिड़ियाँ लौटकर आने लगीं तो जंगल का रखवाला गोधूलिवेला से प्रभात तक झील के किनारे ही जमा रहने लगा। वह अपने हंस की प्रतीक्षा कर रहा था। क्या वह वापस आयेगा? झील के किनारे वसंत ऋतु के दिन बहुत शान दार होते हैं। जब चिड़ियाँ गाती हैं, बत्तखें पानी में कल्लोल करती हैं तब कितना आनन्द आता है। पर ऐसा प्रतीत होता था कि उस समय जंगल के रखवाले को इन सब बातों में कोई आनन्द नही मिलता था। उसे अपने हँस की बड़ी याद आती थीं।

"पर उसे बहुत काम करना था इसलिए अपने निर्मोही मित्र का गम उसके हृदय में कुछ कम हो गया पर वह उसे बिल्कुल भूल न सका।"

"जब सारी चिड़ियां वापस लौट आयीं तब एक दिन प्रातः-काल झील के किनारे टहलते हुए उसने हँसों के दो जोड़े देखे। उसका हँस अपने लिए एक मादा ढूँढ़ लाया था और साथ में एक दूसरे जोड़े को भी ले आया था। और उस दिन से उस झील में हँस आने लगे।"

"दक्षिण में तो मौसम बहुत सुहावना होगा," मातवेई ने इस प्रकार कहा मानो वह स्वप्न देख रहा हो। "वहाँ पेड़ साल भर हरे रहते हैं, नदियों में पानी कभी नहीं जमता। फिर भी हंस लौट आया। वह वहीं रह क्यों नहीं गया?"

जङ्गल के रखवाले ने लड़के के सर पर हाथ फेरते हुये उत्तर दिया "सभी प्राणियों को अपनी मातृभूमि से प्यार होता है। दुनियाँ में कोई स्थान उसके समान नहीं हो सकता, जहाँ किसी का जन्म और पालन-पोषण हुआ हो।"

नाइटिंगेल क्रासिंग

—इब्राहीम अब्दुल्जीन

असाधारण शान्ति से मेरी नींद टूटी। रेलगाड़ी रुक गयी। सुबह हो रही थी। खिड़की के बाहर मुझे स्तपीय प्रदेश के मैदान दिखाई दे रहे थे। सड़क के किनारे सफेद पत्थर का बना हुआ गार्ड का मकान था और उसके पार सनोबर का एक कुन्ज था। प्रभात के अन्तिम सितारे झिलमिलाकर डूबते जा रहे थे।

मेरा साथी फत्ताहोव कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने खिड़की खोली और सनोबर के कुन्ज से बुलबुलों की चहचहाहट सुनकर मेरा हृदय पुलकित हो उठा। आह, वह बुलबुलें...आप अगर एक बार मई के अन्त में यूराल के क्षेत्र में उनका प्रभातसङ्गीत सुन लें तो उम्र भर कभी न भूलें !...

फत्ताहोव अन्दर आया। वह यों तो हमेशा बहुत हँसमुख रहता था और बहुत बातें करता था पर इस समय वह शान्त और विचार-मग्न था।

"इतनी जल्दी कैसे उठ गए, क्या बुलबुलों की चहचहाहट से नींद टूट गई ?"

"नहीं, मुझे अगले स्टेशन पर उतरना है और यह 'नाइटिंगेल क्रासिंग' है।"

"लेकिन तुम इतने उदास क्यों हो ? तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए, तुम्हारा घर आने को है।"

"मुझे देश के इस क्षेत्र की एक कहानी याद आ गई।"

मैंने फत्ताहोव से वह कहानी सुनाने को कहा, और तब उसने कहना आरम्भ किया :

....सनोबर के उस कुन्ज के पार, यहां से लगभग दस किलो-मीटर की दूरी पर 'स्वेतली पुत' नामक एक सामूहिक फार्म है। उस गाँव में एक मशीन तथा ट्रेक्टर स्टेशन भी है। उस स्टेशन में डिस्पैचर के पद पर गौहर नाम की एक सुन्दर लड़की काम करती थी, हालाँकि दूसरी लड़कियां उससे भी सुन्दर थीं। उसका कद तो बहुत लम्बा नहीं था पर उसका शरीर बहुत सुडौल और हृदयग्राही था। वह चलती थी ऐसे, जैसे मन्द हवा का झोंका। उसका रङ्ग सांवला था और उसके दाहिने गाल पर जो तिल था उससे तो सभी स्त्रियों को ईर्ष्या थी। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों के देखने का ढङ्ग जिन पर लम्बी-लम्बी पलकों की छाया रहती थी, सुखकर भी था और साथ ही उसमें एक हल्का-सा व्यंग भी था। पर सबसे ज्यादा आकर्षण उसके अनुपम रूप मे था।

उससे पाँच मिनट बातें करके आदमी सब कुछ भूल जाता था, यह भी कि उसे कहाँ जाना था। मशीन तथा ट्रेक्टर स्टेशन में कुछ ट्रक ड्राइवर ऐसे थे जो सचमुच जान हथेली पर रखकर काम करते थे, डायरेक्टर भी उन्हें वश में नहीं रख सकता था, लेकिन गौहर के सामने वे बिल्कुल भीगी बिल्ली बन जाते थे।...और अकेले ड्राइवर ही क्यों.... मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशन में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था, जो उससे प्रेम न करता हो। कुछ लोग तो केवल इसलिए प्रेम करते थे कि दूसरे

करते थे, मानो यह भी कोई फैशन हो, कुछ और लोग उससे बहन की तरह प्रेम करते थे और कुछ लोग ऐसे भी थे जो यह नहीं जानते कि उसके प्रति उनकी भावनाएँ क्या हैं।

हां तो, उस मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशन के कर्मचारियों में दो मित्र थे—जुलकरनैन जो कम्बाइन मशीन चलाता था और हनीफ जो ट्रैक्टर चलाता था। दोनों अपनी-अपनी जगह पर बहुत दिलचस्प थे। हनीफ की भावनाएँ बहुत स्थिर थी, वह सबसे अलग-अलग रहता और बहुत सोच-समझकर बात कहता। इसके विपरीत जुलकरनैन बहुत चुलबुले स्वभाव का था और उसकी जबान कभी रुकती ही नहीं थी। वह हमेशा अपने प्रेम की बातें हनीफ को बताता था। लेकिन उसके शेष सब प्रेम तो यों ही सामयिक आवेश थे और उनका कोई परिणाम भी नही निकला, जैसे जुकाम हो और अच्छा हो जाये। लेकिन सहसा जुलकरनैन गुमसुम रहने लगा। और फसल काटना आरम्भ होने के पांचवे दिन यदि वे दोनों वर्षा के कारण खेत में न फँस जाते तो कौन जाने हनीफ को अपने मित्र के सबसे नये प्रेम का पता भी चलता कि नहीं।

वे दोनों सरककर फसल काटने की कम्बाइन मशीन के नीचे चले गए। जुलकरनैन विचारो मे डूबा हुआ गेहूँ का सुगन्धपूर्ण तिनका कुतर रहा था; उसमें से सफेद रोटियों की-सी सुगन्ध आ रही थी। हनीफ अपना प्रिय गीत आरजुएं गुनगुना रहा था।

"जुलकरनैन, तुम इतना चुप-चाप क्यों रहते हो?"

"मैं ... हनीफ, मेरा तो किस्सा खतम हो गया।"

"कहीं और आंखे लड़ गई?"

"नहीं इससे भी अधिक! प्रेम हो गया है।"

"तो क्या गड़बड़ है, क्या उधर से कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला! ...या तुम्हें दुतकार दिया है?"

"नहीं, मेरा विचार है कि वह मुझसे प्रेम तो करती है। किन्तु वह कहती है : मैं क्या कोई मूर्ख हूँ कि तुम्हारे जैसे साधारण कम्बाइन चलानेवाले से शादी कर लूँ ?"

"अच्छा, यह कहती है ?"

"और क्यों न कहे ! वह खूबसूरत है, होशियार है और प्रेमियों का एक पूरा काफिला उसके फेर में है। इसीलिए वह इतने नखरे दिखा रही है और मुझे चिढ़ा रही है। क्या मिजाज पाया है।... भाई, मुझे तो डर लगता है उससे। मगर वह हमेशा वक्त पर मिलने आती है, हँसती है, मजाक करती है।"

"डरने की क्या बात है। शादी के बाद ठीक हो जायेगी।"

"नहीं, हनीफ, वह ऐसी नही हैं। वह मेरे पिछड़ेपन का मजाक उड़ाती है।"

"अगर ऐसी बात है तो छोड़ दो उसे", हनीफ ने क्रोध से चिल्लाकर कहा। "वह हम लोगों के योग्य नहीं है। वह तो कोई इन्जीनियर, या डाक्टर चाहती है, हम ठहरे...।"

"कोई बात नहीं है, हम उसकी धमकियों से घबराने वाले नहीं हैं। मैं तो पढ़ूंगा। मैं उसे दिखा दूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

पानी रुक गया, गेहूँ को कुछ हवा लगी। वे दोनों कम्बाइन मशीन के नीचे अपने शरणास्थान से बाहर निकले।

"और हनीफ, तुम्हारे साथ भी तो कोई नयी बात हुई है।"

"कल बताऊंगा।"

"लेकिन कल क्यों ?"

"आज हम...में....मेरा मतलब है आज तै हो जायेगा।"

फसल कटने का आठवाँ दिन आया। गेहूँ की अन्तिम बाल काटी जा चुकी थी; शहद के रङ्ग के दाने खनकते हुए कम्बाइन की

बाल्टी में गिर रहे थे। चारों ओर जहाँ तक दृष्टि जाती थी फसल कट जाने के बाद मुंडे खेत फैले हुए थे, सब एक जैसे शान्त और नीरस।

"बस!" हनीफ ने चिल्लाकर कहा और अपना ट्रैक्टर रोक दिया।

जुलकरनैन भी अपनी कम्बाइन मशीन का इन्जन रोककर नीचे उतर आया और कमीज उतार कर कमर तक नङ्गा होकर ठंडे पानी से हाथ-मुंह धोने लगा।

"मामला क्या है हनीफ, तीन दिन से तुम कल-कल कर रहे हो, कुछ बताया नहीं तुमने?"

"बताने को है ही क्या।.. मैंने निर्णय किया है कि मैं भी पढ़ूंगा और कृषिवेत्ता बनूंगा।"

"पढ़ोगे? मैं तो समझता था कि परमात्मा भी तुम्हें ट्रैक्टर से अलग नहीं कर सकता।"

"परमात्मा से भी शक्तिवान कोई है।"

"कौन? शायद तुम्हारा मतलब डायरेक्टर से है।"

"नहीं डिस्पैचर!"

"गौहर?" जुलकरनैन का दिल धक् से रह गया।

"क्यों क्या हुआ? क्या वह बुरी लड़की है?"

"तुम मजाक कर रहे हो, हनीफ। तुम्हें मालूम हो गया है कि मैं उससे प्यार करता हूँ इसीलिए तुम मेरी हंसी उड़ा रहे हो।"

"क्या कहा! क्या तुम गौहर से प्यार करते हो? तो उस दिन तुम उसी के बारे में कह रहे थे?..."

वे दोनों बड़ी देर तक चुप रहे। खेतों में, जिनमें फसल कट चुकी थी, खामोशी छायी हुई थी; अगस्त की वह शाम बहुत ही शान्त थी। ऐसा मालूम होता था कि सारी दुनिया उसी घटना के बारे में सोच रही थी। आखिरकार जुलकरनैन चुप न रह सका।

"हनीफ जानते हो हम क्या करेंगे ? हम लोग जाकर कालेज में पढ़ें और वहां से जब लौटें तो अकेले नहीं, शादी करके बीवियों के साथ। क्यों ठीक है न ?"

"नहीं, जुलकरनैन मैं इसके लिए सहमत नहीं हूँ।....."

जुलकरनैन का उत्साह ठण्डा पड़ गया।

"तैयार तो मैं भी नहीं हूँ इसके लिए।...अपनी निराशा के कारण और गौहर के प्रति अपने गुस्से की वजह से ही मैंने ऐसा कहा था। वह खूबसूरत है, वह लड़की है,उसे अधिकार है जिसे चाहे पसंद करे।..."

इसके कुछ ही दिन बाद वे पढ़ने चले गये।.....

गाड़ी चल दी। बुलबुलों की मधुर बोली इन्जन से निकलते हुए धुएं के बादलों के पीछे रह गयी, पर बुलबुलों के गीत, या वह गौहर की हंसी थी, मेरे कानों में अभी तक गूंज रहे थे।

"तो कहानी खत्म कहां हुई ? उसने शादी किसके साथ की ?" मैंने फत्ताहोव से पूछा।

"जिससे वह प्रेम करती थी। एक मल्लाह से जिसे फौज से छुट्टी मिल गई थी।

"और वह करता क्या है ?"

"बढ़ई है। सामूहिक फार्म पर मकान बनाता है"

गौहर में मेरी दिलचस्पी सहसा खत्म हो गयी।

"ठीक है", मैंने कहा। "अपनी-अपनी पसंद है। मगर वह उन लड़कों के साथ मजाक क्यों कर रही थी ?"

मेरे साथी ने गौहर का पक्ष लेते हुए कहा—"नहीं ऐसा न कहो। वह बहुत ही अच्छी लड़की थी और उसका सौन्दर्य पुरुषों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता था और उनमें सुन्दर भावनाएं जागृत करता था। उदाहरण के लिए यदि वह उनसे केवल इतना कह देती: लड़को तुम्हें

पढ़ना चाहिए, ज्ञान प्रकाश है, अज्ञान अन्धकार है, एक पढ़ा-लिखा आदमी सौ अनपढ़ों से अच्छा होता है—तो उसे...!"

"अच्छा यह तो मान लिया कि तुम ठीक कहते हो।" मैंने सहमति प्रकट की। "लेकिन उन दोनों लड़कों का क्या हुआ ?"

"हनीफ अब उसी सामूहिक फार्म में चेयरमैन का काम करता है। पिछले बसन्त में उसकी शादी हुई .....

"और जुलकरनैन, वह तो चुलबुला था ?"

"शायद गौहर आखरी लडकी थी जिससे उसने प्रेम किया। इंस्टीट्यूट में अपनी पढाई पूर्ण करने के बाद वह चीफ इन्जीनियर होकर उसी मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशन में वापस आ गया। वह किसी तरह गौहर की शादी के दिन ही वहाँ पहुँच गया। मैंने सुना कि वह सारी रात शादी में नाचता-गाता रहा और दूसरे दिन सबेरे ही वह चला गया।....अब वह अल्ताई के क्षेत्र की बंजर जमीनों पर खेती कर रहा है।..."

गाड़ी स्टेशन पर रुक गयी। मैंने फत्ताहोव को विदा किया। एक अधेड़ उम्र की औरत ने, जो उसकी ही इतनी लम्बी थी, प्लेटफार्म पर उसका स्वागत किया। शायद उसकी माँ थी।

मुझसे हाथ मिलाते हुए फत्ताहोव ने कहा-"अगर समय मिले तो हमारे यहां आना। हमारी बुलबुलों को सुनना और समारी 'कोयल' को भी देखना। मैंने अपना पता गाड़ी में छोड़ दिया है।"

गाडी रफ्तार पकड़ रही थी मानो मेरी नींद भगाने के लिए ही जल्दी कर रही हो। मैं डिब्बे में घुसा। वहां मेज पर एक कागज का टुकड़ा रखा था जिस पर मेरे साथ सफर करने वाले का नाम और पता लिखा था : फत्ताहोव जुलकरनैन.....

नन्हा आन्द्रेई

—ग्रिगोरी बोरोवनिको

: १ :

उसके पिता का देहान्त वसन्त के आरम्भ में हुआ था। दुनियाँ की इस व्यवस्था पर नन्हे आन्द्रेई को बड़ा आश्चर्य होता था: एक तरफ तो फूलों से ढकी और हरियाली से लदी हुई जमीन थी और उधर उसका पिता, जो अभी कुछ दिन पहिले तक कितना मस्त, हट्टा-कट्टा और दयालु व्यक्ति था, अब निश्चल और मूक पड़ा था। बालक का बालोचित उत्साह से पूर्ण और संवेदनशील स्वभाव प्रतिरोध कर उठा, वह उसका उत्तर खोजने लगा, उसका हृदय व्यथित हो उठा। लेकिन वह समझ में न आने वाली रहस्यमयी बातों के जगत में खोकर ही रह गया।

एक-दो महिने में जब घर का जीवन फिर अपनी पुरानी लीक पर चलने लगा तो उसकी माँ ने मानो स्वप्न देखते-देखते चौंककर कहा—"कितने दुबले हो गये हो तुम! तुम्हें हुआ क्या है?"

उसकी माँ ने अपनी बाहों में भींचकर सीने से लगा लिया फिर उसके दुबले-पतले छोटे-छोटे कंधों और पीठ को थपककर अपनी सूखी

आँखों से उसे देखने लगी; उसकी आँखों में अकथनीय वेदना छुपी हुई थी। आन्द्रेई चुपचाप अपनी माँ की बात सुनता रहा, उसके हृदय में भावनाओं का एक ज्वार-सा उठने लगा था।

"तुम्हें बड़े होने में अभी कितना समय लग जायगा।" उसकी मां ने अपने शान्त सपाट स्वर में कहा—"तुम कितने छोटे और दुर्बल हो।..."

"मैं तो बहुत बड़ा हो चुका हूं।" आन्द्रेई ने अपनी माँ को नजरें जमाकर देखते हुए गंभीरतापूर्वक कहा—"मैं अपनी कक्षा में सबसे लम्बा हूं।"

"मनुष्य की शक्ति उसके कद से नहीं नापी जाती।" उसकी माँ ने बुदबुदाकर कहा और कुछ देर रुककर फिर बोलो, "बल्कि वह तो इस बात से नापी जाती है कि मनुष्य जिंदगी का मुकाबला किस प्रकार करता है।"

अपने पिता की मृत्यु के बाद आन्द्रेई के स्वभाव में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। वह ज्यादा गंभीर और बहुत कर्तव्य परायण हो गया, स्कूल में घर के लिए दिया गया काम ज्यादा मेहनत से करने लगा, और जब उसकी माँ काम पर गयी होती तब वह कमरे साफ कर देता। अपनी माँ के प्रति उसके व्यवहार में कुछ गंभीरता आ गयी, मानो उसमें परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व की चेतना जागृत हो गयी हो।

बाहर से देखने में भी वह बदल गया था। दुबला और लम्बा तो वह था ही, वह लंबे-लंबे डग भरकर झूलता हुआ चलता था। और वह अपने होठ भींचकर इस प्रकार अंदर को खींचे रहता था मानो वह अपने मुंह में ताला लगाये हो ताकि जितनी बात वह कहना चाहता है उससे जरा भी ज्यादा बात न निकलने पाये।

समय के प्रवाह के साथ आन्द्रेई के हृदय की पीड़ा कम होती गयी, पर दिल ही दिल में कुछ सोचते रहने का बोझल वातावरण पूर्ववत् बाकी ही रहा। वह इस प्रकार हमेशा अपनी माँ के साथ रहने के विचार का आदी हो गया—बस केवल वह दोनों; और इस बात के आभास के कारण ही वह अपने कंधों पर उत्तरदायित्व का ज्यादा से ज्यादा बोझ लादने लगा।

एक दिन सर्दियों में उसकी मां असाधारण रूप से गंभीर मुद्रा लिए घर लौटी। उसने पानी भर जाने और दूसरे दिन सुबह के लिए लकड़ी चीर रखने के लिये आन्द्रेई की प्रशंसा की—और रात के लिए खाने के समय उसे बताया कि सामूहिक फार्म ने अनाज ओसाने की जो नई मशीन खरीदी थी उसे उन्होंने किस प्रकार आजमाया। लैम्प की रोशनी में उसकी माँ का चेहरा, जो हमेशा बर्फानी हवा के थपेड़े खाते रहने के कारण लाल हो गया था, अपेक्षतः आज जवान दिखाई पड़ रहा था। उसकी काली धनुषाकार भवें ऐसी लग रही थी मानो काजल से बड़े सुथरे ढङ्ग से संवारी गयीं हों और उनकी घनी पलकों के नीचे उसकी आँखें शांत ज्योति से चमक रहीं थीं।

"आन्द्रेई !"—उसकी माँ की आवाज में उत्सुकता की एक ऐसी गूँज थी कि बालक का दिल बैठ गया। वह अपना मुँह आधा खोले मुस्कराता हुआ उसे घूरता रहा। "आन्द्रेई, मेरे लाल," उसने बड़ी ममता से पुनः कहा और सहसा आँखें सिकोड़कर उसे देखा मानो कुछ खोज रही हो। "तुम निकिता को जानते हो ना ?"

"हां माँ जानता क्यों नहीं हूं।" आन्द्रेई ने जल्दी से कहा, उसे एक दम घने बालों वाला वह गठीला और फुर्तीला व्यक्ति याद आ गया जिसके कंधे बहुत चौड़े थे। "उसने पिछली बार हमारे स्टोव की मरम्मत की थी।"

"हाँ वही।" उसकी माँ की आवाज में किसी कारणवश खुशी थी। "हाँ वह स्टोव मरम्मत करता है और बढई का काम भी अच्छा जानता है।"

"मैं जानता हूं।" आन्द्रेई ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

कई मिनट तक उसकी माँ विचारों में डूबी हुई खामोश रही और जब वह दुबारा बोली तो उसकी गंभीर आँखें आंद्रेई से परे देख रही थीं।

"मैं तुम्हें बताना चाहती थी....ए.. हां...मैं तुम्हें निकिता के बारे में बताना चाहती हूँ।"—वह बोलने में लड़खड़ा रही थी। उसने बड़ी कठिनाई से कहा, "वह हमारे साथ रहेगा।"

"क्यों?'

"यह जरूरी है।...तुम उसे डैडी कहोगे।"

"मैं नहीं कहूँगा।" आन्द्रेई ने दृढ़ता से जवाब दिया। वह अब सारी बात समझ गया था।

उसकी माँ मेज साफ करने लगी और वह खिड़की के पास जाकर शीशों पर जमी हुई बर्फ की नीलवर्ण हल्की-सी तह का निरीक्षण करने लगा। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसकी माँ ने उनके जीवन की धारा को बदल देने का निश्चय क्यों किया था; उनके जीवन में यद्यपि कठिनाईयाँ थीं पर उसमें ऐसे छोटे-छोटे सुख थे जो उन दोनों को प्रिय थे। यह सच है कि जब उसके पिता जीवित थे तब जीवन और भी अच्छा था। और सहसा उसके पिता की स्मृतियों की एक प्रबल लहर उसके शरीर में दौड़ गयी। उसे वह प्रिय मुखाकृति इतने स्पष्ट रूप से याद आयी कि उसका हृदय अपने पिता के प्रति पीड़ा और व्यथा से संकुचित हो उठा और उसका हृदय एक कटुभावना से भर गया मानो सारी दुनियां ने उसके साथ अन्याय किया हो। उसके होंठ कांपने लगे, उसकी आंखें जल्दी-जल्दी झपकने लगीं और उसने अपना आंसुओं से भीगा हुआ चेहरा खिड़की की ठण्डी चौखट से सटा दिया।

: २ :

निकिता बसंत के आरम्भ में घर रहने के लिए आगया। एक दिन स्कूल से घर वापस लौटने पर आन्द्रेई ने खूंटी पर एक अपरिचित-सा कोट देखा। वह ताड़ गया कि बात क्या है और उसने कमरे तथा रसोईघर में जाकर देखा। बेंच पर एक खुला हुआ सूट-केस पड़ा था, फर्श पर क्रोम के चमड़े के लम्बे बूट रखे हुए थे और अल्मारी पर एक उस्तरा और कलई का साबुनदान रखा था। निकिता के हैं..."

उस दिन की बातचीत के बाद उसकी माँ ने फिर कभी निकिता का जिक्र नहीं किया था और इस बात पर कि वह अपना सामान ले कर उनके घर में आगया था आन्द्रेई को धक्का-सा पहुँचा।

उन अपरिचित चीजों को देख और यह सोचकर कि अब उनकी चीजों के पास ही हमेशा उन चीजों के लिये भी स्थान रहेगा, आश्चर्य-सा होता था।

निकिता शाम को उसकी माँ के साथ घर आया। वह रसोईघर में अपने काम में व्यस्त हो गयी और इतनी देर में निकिता ने हाथ-मुँह धोकर साफ कपड़े पहिन लिये और आन्द्रेई से बातचीत प्रारंभ कर दी।

"तुम्हें स्कूल से घर लौटे हुए क्या काफी देर हो गयी है?" उसने नरमी से पूछा।

"नहीं।" आन्द्रेई ने बुदबुदाकर उत्तर दिया।

"वर्णमाला में सबसे बड़ा अक्षर कौन-सा होता है?" निकिता ने आन्द्रेई से सुहृदयतापूर्वक मुस्कराते हुये पूछा। बालक चुप रहा। "जब मैं स्कूल जाता था उस समय मेरे दादा हमेशा मुझ से यही सवाल

पूछते थे। उनका मतलब अक्षर 'शा' से होता था। वह केवल यही अक्षर जानते थे।"

निकिता अपने दादा के बारे में बोलता रहा पर वह जो कुछ कह रहा था उसे आन्द्रेई पूरी तरह सुन नहीं रहा था। उसका सारा ध्यान निकिता के चेहरे पर केन्द्रित था। उसका माथा बहुत चौड़ा था और उसके सफेद दांत मजबूत थे। उसकी आंखों में भी बड़ी नरमी थी।.....फिर भी वह अजनबी तो था ही।

आन्द्रेई ने निकिता के चेहरे से अपनी आंखे फेरकर अपनी किताब की तरफ हाथ बढ़ाया।

"पढ़ने जा रहे हो ?" निकिता ने पूछा।

उसने कुछ उत्तर नहीं दिया और निकिता समझ नहीं पाया कि उसने ऐसा परेशानी के कारण किया था या उसके प्रति विरोध की भावना के कारण। उसने इसके बाद कोई प्रश्न नही पूछा और धीरे-धीरे सीटी बजाता हुआ रसोईघर में चला गया।

और इस प्रकार अपने सौतेले पिता के साथ आन्द्रेई का जीवन आरंभ हुआ।

निकिता बड़ा दयालु और हंसमुख आदमी था। उसके आने से बहुत काफी परिवर्तन हो गये। उदाहरण के लिये शाम को निकिता अपना रंदा और आरी लेकर काम में जुट जाता और नाना प्रकार की खुली और किवाड़ों वाली अलमारियाँ बनाता रहता या फिर जूतों की मरम्मत करता। उसने आन्द्रेई के साथ दोस्ती करने का प्रयत्न किया पर चूंकि इस दिशा में उसके हर प्रयास का स्वागत बड़े रूखे ढङ्ग से हुआ इसलिये उस बालक के प्रति उसके रवैये में भी कुछ अवरोध पैदा होगया। उसने बालक के साथ अपनी बातचीत को भी इस आशा से

कम कर दिया कि धीरे-धीरे उसके सौतेले बेटे का विरोध खत्म हो जायगा। दूसरी तरफ आन्द्रेई की माँ पुत्र के साथ ज्यादा प्रेम और ममता का व्यवहार करने लगी मानो निकिता के आने से वह उसे और भी प्रिय हो गया हो।

आन्द्रेई अपनी माँ और अपने सौतेले बाप के साथ स्पष्ट उदासीनता के साथ पेश आता था मानो वह अजनबी हो। पर यह केवल देखने में ही ऐसा था। घर में एक अजनबी की उपस्थिति को वह हृदय से कभी स्वीकार न कर सकता था। उसके हृदय में व्यथा और पीड़ा की एक भावना छुपी हुई थी। वह निकिता से बहुत कम बोलता था और हर बार ग्लानि की एक भावना उसे परेशान करती थी कि वह अपने आपको उसे चाचा कहने पर भी राजी न कर सकता था। निकिता को इस बात का कोई दु.ख नहीं था; ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस ओर कोई ध्यान ही नही देता था। पर जब वह दोनों अकेले होते तो उसकी मां आंद्रेई को इस बात के लिये डांटती थी।

"आखिर तुम्हारा बरताव ऐसा क्यों है? मुझे तुम पर शर्म आती है। मैं चाहती हूं कि तुम उसकी इज्जत किया करो—"

"मैं इज्जत करता तो हूं। मैं कभी उसके साथ बदतमीजी नहीं करता।....."

उसकी माँ ने निराशा से अपने दोनों हाथ फैला दिये और फिर कुछ नहीं कहा।

कई सप्ताह बीत गये। परिवार का जीवन अपनी चिरस्थापित शान्तिपूर्ण लीक पर चलता रहा। आंद्रेई अपने सौतेले बाप की उपस्थिति और अपनी माँ के साथ उनकी दोस्ती का आदी हो गया। वह निकिता के साथ अपने सीमित संबंध का भी आदी हो गया। अब

उसकी माँ ने उसे डांटना भी छोड़ दिया था।

एक दिन आधी रात को आन्द्रेई की आंख खुल गयी और उसने अपनी माँ और सौतेले बाप को आपस में फुसफुसाकर बात करते सुना।

"आंद्रेई को ज्यादा अच्छे भोजन की जरूरत है" उसका सौतेला बाप कह रहा था। "वह बड़ा हो रहा है और स्कूल में पढ़ने जाता है। तुम उसे डांटा न करो....."

"भगवान जानता है, मैं अपनी पूरी कोशिश कर रही हूँ···।" उसकी मां ने आह भरकर उत्तर दिया।

"और फिर उसका बाप भी नहीं है। तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये···।" उसके सौतेले बाप ने पुनः कहना आरम्भ किया लेकिन आंद्रेई को फिर नींद आगई और बाकी बात वह न सुन सका।

कुछ दिन बाद निकिता पूआल और भूसा तैयार करने चला गया और आन्द्रेई ने अनुभव किया कि अब घर पर मां के साथ अकेले छोड़ दिये जाने पर उसके हृदय में कोई खुशी नहीं थी। पहली बार उसने एक अस्पष्ट-सी हुड़क का अनुभव किया मानो परिवार का कोई व्यक्ति बिछुड़ गया हो।

: ३ :

कमर तक नङ्गा, केवल नेकर और टोपी पहिने आंद्रेई झील के घास से ढके हुये ढलवान किनारे पर खड़ा बाहर की ओर निकली पड़ने वाली आंखों वाले मेंढकों पर ढेले फेंक रहा था; इन मेंढकों का रंग कुमुदिनी के उन पत्तों जितना ही हरा था जिन पर वे बैठे हुये थे। मेंढक फुदककर पानी में चले जाते और फिर कूद कर बाहर निकल

आते—मानो वे बालक को छेड़ रहे हों।

आखिरकार, आंद्रेई इस काम से थक कर बैठ गया। बड़ी गर्मी पड़ रही थी। नरकुल के बूढ़े वृक्ष मानो नींद से झील पर झुके हुए थे। उनकी टहनियों के नीचे पानी का रंग गहरा काही था। वहां गहरे पोखरों में बड़ी-बड़ी पाइक मछलियां रहती थीं जो वृद्धावस्था को पहुंच गयी थीं। आंद्रेई ने कंटिया में खाद्य लगाकर उसे पानी में डाल रखा था पर उसमें एक भी मछली नहीं फँसी।

तब आंद्रेई मटरगश्ती करता हुआ घास के मैदान की तरफ चल दिया।

घास के प्रशस्त मैदान को पार करते हुए दो घोड़े आ रहे थे। उनके पीछे ऊँची-ऊँची जमीन पर उछलती हुई घास काटने की मशीन खिची चली आ रही थी। मशीन से चर-चर की आवाज निकल रही थी और यह आवाजें घास की खुशबू से बोझल शान्त हवा में घुलमिल जाने के बजाय पत्थरों के टकराने की आवाज के समान सुनाई दे रही थी। घास काटने की मशीन पर निकिता बैठा हुआ घोड़ों को हाँक रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह चाबुक फटकार कर चिल्लाता था—"चल रे, चल, अड़ियल कहीं का!"

निकिता ने घोड़ों को रोके बगैर आंद्रेई से कहा—"जरा आराम कर लो मैं एक चक्कर और लगा कर आता हूँ। तुम थक गये होगे।"

आंद्रेई पर न तो निकिता के इन शब्दों का कोई प्रभाव हुआ और न उसकी मुस्कराहट का। उसने अपने सौतेले बाप की चौड़ी-सी पीठ को देखा, उसकी पसीने में भीगी हुई कमीज बहुत कसी होने के कारण पीठ पर चिपकी हुई थी। फिर घोड़े घास काटने की मशीन और उसके सौतेले बाप को लिए हुए एक झाड़ी के पीछे गायब हो

गये। आंद्रेई झोंपड़ी की तरफ चल दिया जहां छाया सबसे घनी थी। उसने छाछ का बरतन बड़ी सावधानी से एक बाल्टी में रखकर फिर उसमें खीरे रख दिये और रोटी की पोटली हूर-वृक्ष के ठूंठ पर रख दी। ये सब चीजें उसकी मां ने भेजी थीं।

सामूहिक फार्म के सूखी घास के खेत गांव से काफी दूर थे। वहां घास काटने वालों की संख्या थोड़ी ही थी और उनके घर के लोग उनके लिए घर से आलू, छाछ, सब्जियां और रोटी लाते थे। कभी-कभी शाम को घास काटने वाले झील में से जाल से मछली पकड़ते थे और चाउडर पकाते थे।

उस समय, आन्द्रेई का इरादा अपने सौतेले पिता का इन्तजार करके माँ के लिये उसका सदेश सुनकर तब खादर की तरफ जाने का था। शाम होने में अभी बहुत देर थी। उसके पास नहाने, छोटी-मोटी मछलियां पकड़ने, खाद्य लगी हुई कंटिया को हटाकर किसी दूसरे स्थान पर लगा देने और पेड़ों पर चढ़कर टिटमाइस के घोंसलों का जो मिटेन से बहुत मिलते-जुलते थे, निरीक्षण करने के लिये काफी समय था। वोल्गा की घाटी मे गर्मी के लम्बे दिनों में बहुत से काम किये जा सकते थे; कदम-कदम पर ऐसी चीजें मिलती थी जिनसे जी बहलाया जा सकता था।

इसी बीच, घास के मैदान का चक्कर लगाकर घोड़े लौट आये थे और आकर ठहर गये थे। निकिता मशीन पर से उतरा, घोड़ों को खोलकर उनकी लगाम से उन्हें एक छायादार हर-वृक्ष के तने से बांध दिया, उनके पट्टों को धूप में सुखाने के लिए डाल दिया और फिर पानी के किनारे चला गया जहां वह बड़ी देर तक मुँह-हाथ धोता रहा।

आँद्रेई बैठा प्रतीक्षा करता रहा। उसका सौतेला बाप अपने लाल चेहरे को तौलिये से पोंछता हुआ ताजा हो कर वापस लौटा और पसीने में तर अपनी कमीज उतारकर अपने सौतेले बेटे के पास बैठ गया और उससे पूछा—"अच्छा, तो आज तुम्हारी माँ ने हमारे लिए क्या भेजा है ?"

निकिता ने रोटियों की पोटली खोली और बाल्टी में से जग निकाल कर उसके मुँह पर बँधा हुआ साफ पुराना कपड़ा खोल दिया। उसने बड़ी सफाई से रोटी को बराबर-बराबर टुकड़ों में काटा और फिर खीरों को दो टुकड़ों में काट कर उनपर नमक छिड़क दिया।

आन्द्रेई उसके हाथों की एक-एक क्रिया को, जो काम करते-करते सख्त हो गये थे और जिन पर काले रोएँ उगे हुये थे, ध्यान से देखता रहा। निकिता की बड़ी-बड़ी आंखों में हर्ष की एक चमक थी। इतमीनान से खाने की तैयारियां करने का यह ढङ्ग आन्द्रेई को बहुत अच्छा लगा और जब निकिता ने खाना सजाकर कहा, "आओ, खाना खा लें", तो आन्द्रेई ने रोटी का एक टुकड़ा, एक खीरा और कुछ नयी प्याज लेकर खाना आरंभ कर दिया।

"घर का क्या हाल-चाल है ?" निकिता ने खीरा चबाते हुए पूछा।

आन्द्रेई ने उसे बता दिया।

"माँ ने कोई संदेश भेजा है ?"

"वह चाहती है कि तुम घर आकर नहा लो।"

"मुझे बहुत काम है। चार-पाँच दिन में घास काटने का काम समाप्त हो जायगा, तब नहायेंगे।.....मैं यहीं झील में हाथ-मुँह धो लेता हूं। उसे यह बता देना।"

"अच्छी बात है।"

खाना खाकर निकिता ने घोड़ों को ले जाकर झील में पानी पिलाया, उन्हें खाने के लिये कुछ घास दी और सर के नीचे अपनी रुई भरी जाकिट रखकर लेट गया।

आन्द्रेई को घोड़ों से बड़ा प्रेम था और उसकी बड़ी अभिलाषा थी कि वह उन्हें झील पर ले जाया करे। पर उसके सौतेले बाप ने उसे साथ नहीं बुलाया था। उसके अन्दर कोई चीज मचल रही थी जिसके कारण उसे बड़ी पीड़ा का अनुभव हो रहा था। पर उसने कहा कुछ नहीं, केवल अपने होंठ कसकर भींच लिये और अपनी उदास आंखें सिकोड़ लीं।

"तुम जा रहे हो या थोड़ी देर बैठोगे?" उसके सौतेले बाप ने पूछा।

"मैं थोड़ी देर यहां बैठूंगा।" आन्द्रेई ने एक क्षण तक सोचने के बाद उत्तर दिया।

"मैं थोड़ी देर सोऊंगा और तुम घोड़ों का जरा ध्यान रखना। क्या तुम घास खा चुकने के बाद उन्हे पानी पिला लाओगे?"

"हां, पिला लाऊंगा", आन्द्रेई ने तनकर बैठते हुये जल्दी से उत्तर दिया।

पहली बार उसे जब दिन भर के लिये अपनी कक्षा का मानीटर बनने को कहा गया था तब उसने ऐसे ही रोमांच का अनुभव किया था। उसने गीले कपड़े से ब्लैकबोर्ड अच्छी तरह साफ किया था और फर्श से कागज के तमाम टुकड़े उठा लिये थे। लड़कों ने उसे छेड़ने के लिये बहुत शोर मचाया था पर उसे क्रोध नहीं आया था।

शीतकालीन ओकवृक्ष

—यूरी नागिबिन

स्कूल केवल आधा किलोमीटर दूर था, इसलिए अध्यापिका ने अपने कंधों पर केवल जाड़े का एक छोटा कोट डाल कर अपने सर पर एक हल्का-सा ऊनी शाल ढीला-ढाला बांध लिया। बाहर कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी; बर्फ के बादल उड़ाती हुई बर्फानी हवाओं ने उसे सर से पैर तक बर्फ में नहला दिया।

अपनी नाक और गालों पर तुषार की चपेट तथा खुले हुये कोट के नीचे हवा की ठण्डी सांस के स्पर्श में उसे बड़ा आनन्द आ रहा था।

जनवरी का वह ठण्डा तथा नाना प्रकार के रंगों में सजा हुआ वह दिन, विशेषकर जीवन के बारे में और स्वयं उसके बारे में भी उत्साहमय विचार जागृत कर रहा था। वह दो वर्ष पहिले कालेज छोड़ कर सीधे यहां आई थी पर इतनी जल्दी ही उसने एक रूसी भाषा की एक कुशल तथा अनुभवी अध्यापिका होने की प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी।

आन्ना वासिलिएवना का पहला पाठ पाँचवीं कक्षा में था। पढ़ाई आरंभ होने के समय की घोषणा करती हुई घण्टे की तेज आवाज स्कूल की इमारत में उस समय भी गूँज रही थी जब उसने क्लासरूम में प्रवेश किया। उसके आते ही सब बच्चे उसका अभिवादन करने के लिए खड़े हुये और फिर अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गये। शोर फौरन बन्द नहीं हुआ। बीच-बीच में कोई डेस्क का ढक्कन जोर से बन्द करता, फिर कोई बेंच चरमराती और कोई बड़े जोर से आह भरता, शायद इस प्रकार वह स्कूल से पहले की सुखद घड़ियों को बड़े खेद के साथ विदा कर रहा था।

"आज हम पदों पर विचार करेंगे।"

अब क्लासरूम में पूरी खामोशी थी और बाहर से सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई मोटरों के टायरों की छप-छप की आवाज आ रही थी।

"संज्ञा उस पद को कहते हैं जो उस वस्तु के नाम को इंगित करे जिसके बारे में बात की जा रही हो। व्याकरण में उद्देश्य किसी भी ऐसी चीज को कहते हैं जिसके बारे में पूछा जा सके: यह क्या है, या, कौन है? जैसे: वह कौन है? एक छात्र। या, यह क्या है? एक पुस्तक।"

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?"

अधखुले दरवाजे में नमदे के मैले जूते पहिने एक छोटी-सी आकृति खड़ी थी; जूतों पर तुषार की छोटी-छोटी चमकदार चिंगारियां पिघलने से धुँधली पड़ती जा रही थीं। तुषार के कारण लाल पड़ा हुआ उसका गोल चेहरा ऐसा दिखायी पड़ रहा था मानो उस पर चुकंदर का रस मल दिया गया हो और उसकी भवें बिल्कुल सफेद हो रही थीं।

"फिर देर से आये, सावुकिशन !" अधिकांश युवा अध्यापकों की तरह आन्ना वासिलिएवना में भी सख्ती करने की प्रवृत्ति थी, पर इस बार उसकी आवाज में नम्रता का भाव था।

यह मानकर कि अध्यापिका के शब्दों का उद्देश्य यह था कि उसका उत्तर स्वीकृति में दिया जाये, कोलिया सावुकिशन जल्दी से लपककर अपनी जगह पर बैठ गया। आन्ना वासिलिएवना ने देखा कि लड़के ने मोमजामे का थैला अपनी डेस्क में रखा और बिना सर मोड़े उसने अपने पास वाले लड़के से फुसफुसाकर कुछ कहा। शायद वह यह पूछ रहा था कि अध्यापिका कक्षा में क्या पढा रही थीं !

सावुकिशन की सुस्ती पर आन्ना वासिलिएवना झुँझला उठीं, मानो किसी परेशान करने वाली घटना ने उस दिन को जो इतनी अच्छी तरह आरंभ हुआ था नष्ट कर दिया हो। भूगोल के अध्यापक ने भी सावुकिशन के देर से स्कूल आने की शिकायत की थी।

"तुम लोग सब कुछ समझ गये ?" आन्ना वासिलिएवना अब पूरी कक्षा को संबोधित कर रही थीं।

"सब कुछ ! सब कुछ !" बच्चों ने एक स्वर में उत्तर दिया।

"अच्छी बात है। तो अब कृपा करके कुछ उदाहरण दो।"

कुछ क्षण तक कक्षा में खामोशी रही फिर किसी ने झिझकते हुये कहा, "बिल्ली।"

"ठीक," आन्ना वासिलिएवना ने कहा और इसके बाद तो ऐसा मालूम हुआ जैसे बांध टूट गया हो।

"खिड़की ! मेज ! घर ! सड़क !"

"बिल्कुल ठीक," आन्ना वासिलिएवना ने कहा और बच्चों द्वारा

कहे गये शब्दों को दुहराया।

चूंकि पूरी कक्षा में हर्ष की लहर-सी दौड़ गयी थी इसलिए आन्ना वासिलिएवना विस्मय के साथ देख रही थीं कि परिचित वस्तुओं का नाम लेते समय बच्चे कितना हर्ष अनुभव कर रहे थे मानो उनमें एक नया तथा असाधारण महत्व मालूम कर लिया हो।

"अच्छा बस," उन्होंने कहा। "मैं मानती हूं तुम लोग समझ गये।"

अन्यमनस्कता से आवाज धीमी पड़ने लगीं। फिर सहसा, मानो किसी स्वप्न से चौंककर सावुकिशन उठ खड़ा हो गया और उसने गूंजती हुई आवाज में कहा : "शीतकालीन ओकवृक्ष !"

कमरे भर में हँसी की एक लहर दौड़ गई।

"शीतकालीन ओकवृक्ष," सावुकिशन ने अपने सहपाठियों के उपहास की ओर कोई ध्यान दिये बिना फिर कहा। ये शब्द सीधे उसके हृदय से एक प्रवाह की तरह फूट निकले थे मानो वह किसी ऐसे सुखद रहस्य का उद्घाटन कर रहा हो जिसे उसकी परिपूर्ण आत्मा अब और अधिक रोककर न रख सकती हो।

आन्ना वासिलिएवना कुछ भी समझ न सकीं कि वह बालक इस असाधारण ढङ्ग से सहसा क्यों फूल पड़ा था; उन्होंने पूछा—"शीतकालीन ओकवृक्ष क्यों ? केवल ओकवृक्ष पर्याप्त है।"

"केवल ओकवृक्ष कहने से काम नहीं चलेगा। शीतकालीन ओकवृक्ष वास्तव में संज्ञा है !"

"बैठ जाओ, सावुकिशन। कक्षा में देर से आने का यही फल होता है। 'ओकवृक्ष' संज्ञा है; जहां तक 'शीतकालीन' का संबंध है वह एक ऐसा पद है जिसके बारे में अभी हमने नहीं पढ़ा है।

दोपहर की छुट्टी के समय तुम कृपा करके अध्यापकों के पढ़ने के कमरे में आ जाना।"

"वहां तुम्हें शीतकालीन ओकवृक्ष अच्छी तरह मिलेगा।" पिछली बेंचों से किसी ने व्यंग किया।

अध्यापिका का पाठ जारी रहा।

अध्यापकों के पढ़ने के कमरे में बालक बड़ी कृतज्ञयता के साथ एक आराम कुर्सी पर बैठकर उसकी नर्म स्प्रिंगों पर हौले-हौले ऊपर-नीचे उचकने लगा।

"कृपा करके मुझे यह बताओ कि तुम हमेशा देर से क्यों आते हो?"

"आन्ना वासिलिएवना, विश्वास कीजिये मुझे इसका कारण नहीं मालूम," उसने बिल्कुल प्रौढ़ व्यक्ति की तरह विस्मय की मुद्रा के साथ उत्तर दिया। "मैं घर से स्कूल आरंभ होने के समय से पूरे एक घण्टे पहले चल पड़ता हूँ।"

"तुम्हें झूठ बोलते शरम आनी चाहिये। तुम्हारे घर से बड़ी सड़क तक पैदल चल कर आने में पंद्रह मिनट लगते होंगे और फिर उसके बाद अधिक से अधिक आधा घण्टा और।"

"मैं उधर से नहीं आता। मैं तो जंगल से होकर एक छोटे रास्ते से आता हूँ।" कोलिया सावुकिशन ऐसे बोल रहा था मानो उसे स्वयं भी इस बात पर आश्चर्य हो रहा हो।

"खैर, लेकिन यह तो बहुत ही बुरी बात है; मुझे तुम्हारे माता-पिता से बात करनी होगी।"

"आप जानती हैं मेरी केवल माता ही हैं।" लड़के ने मुस्कराते हुये कहा।

आन्ना वासिलिएवना कुछ शरमा गईं। उन्हें याद आया कि कोलिया की माँ के पति की मृत्यु युद्ध में हो गयी थी। अब वह सैनेटोरियम में काम करती थी और कोलिया के अतिरिक्त अपने तीन और बच्चों का पालन-पोषण करती थी। शायद उस स्त्री की चिंताएँ यों ही काफी होंगी। फिर भी उन्हें उससे बात तो करनी ही होगी।

"मेरा ख्याल है कि मुझे तुम्हारी माँ से मिलना पड़ेगा।"

आन्ना वासिलिएवना, जरूर मिलिये। माँ आपसे मिलकर बहुत खुश होंगी।"

"लेकिन मैं उन्हें जो रिपोर्ट दूँगी उससे उन्हें खुशी नहीं होगी। क्या तुम्हारी माँ सुबह काम पर चली जाती हैं?"

"नहीं, वह दूसरी पाली में हैं; वह पाली तीन बजे शुरू होती है।"

"अच्छी बात है। मुझे दो बजे छुट्टी हो जाती है। स्कूल के बाद मैं तुम्हारे साथ घर चलूँगी।"

कोलिया अन्ना वासिलिएवना को ऐसे रास्ते लेकर चला जो स्कूल के भवन के पीछे से आरभ होता था। जिस क्षण उन्होंने जंगल में प्रवेश किया और फरवृक्ष की हिमाच्छादित डालें उनके गुजर जाने के बाद फिर एक दूसरे से मिल गईं, तब उन्होंने अपने आपको शान्ति तथा निस्तब्धता के एक नये जादू-भरे जगत में पाया। रास्ता छोटे-से चश्मे के किनारे होकर जाता था। कहीं-कहीं तो वह रास्ता शान्त भाव से चश्मे के टेढ़े-मेढ़े मार्ग के किनारे-किनारे चलता था और कहीं-कहीं वह उसके धरातल से ऊँचा उठकर उसके तीव्र ढलान वाले किनारे के ऊपर रेंगता हुआ चढ़ जाता था। किसी-किसी स्थान पर यह चश्मा हिम के एक मोटे-से कम्बल में लिपटा

हुआ था या बर्फ के चमकदार जिरह-बक्तर के नीचे जकड़ा पड़ा था और कहीं-कहीं पर बर्फ या हिम में बने हुये सूराख में से स्पंदनशील जलस्रोत अपनी काली, अशुभचिंतक आंख दिखाता था।

"यह क्या बात है कि इस जगह इस पर बर्फ नहीं जमी है?" आन्ना वासिलिएवना ने पूछा।

"गर्म पानी के सोतों के कारण ही ऐसा होता है। वह लहर देखती हैं आप?"

आन्ना ने झुककर देखा कि चश्मे की तली से जल की एक अति क्षीण धारा रिस रही थी, जो धरातल तक पहुंचने से पहले ही छोटे-छोटे बुलबुलों के रूप में परिणत हो जाती थी। बुलबुलों से सुशोभित पानी की वह क्षीण धारा बसन्तकाल में खिले हुये घाटी के कुमुद से बहुत मिलती-जुलती थी।

"यहां आस-पास गर्म पानी के सोतों की कोई कमी नहीं है," कोलिया जोश में आकर कह रहा था। "यह चश्मा हमेशा स्पंदनशील रहता है, बर्फ के नीचे भी।"

उसने हिम एक तरफ को हटा दी और उसके नीचे से तारकोल जैसा काला परन्तु फिर भी निर्मल जल दिखाई पड़ने लगा।

रास्ता हार्थन की झाड़ी को कतरा कर निकल गया और फिर सहसा पेड़ों के बीच से गुजरते हुये वे एक खुली जगह में पहुँच गये जिसके बीच में श्वेत चमकदार वस्त्रों में आभूषित एक ओकवृक्ष भव्य गिरजाघर की तरह आकाश को छूने का प्रयत्न करता हुआ जंगल के अन्य पेड़ों के ऊपर मस्तक ऊँचा किये खड़ा था।

ऐसा प्रतीत होता था कि आस-पास के पेड़ों ने बड़े आदर के साथ अपने बड़े भाई के लिए जगह कर दी थी ताकि वह अपनी पूरी

शक्ति के साथ फैल सके। उसकी निचली शाखें पूरे खुले मैदान पर शामियाने की तरह फैली हुई थीं। पेड़ की छाल पर पड़ी हुई झुर्रियों में जो बर्फ गहराई तक जम गयी थी, उसे देखकर यह भ्रम होता था कि इस वृक्ष के भीमकाय तने पर, जिसे तीन आदमी अपनी बांहें जोड़कर ही अपने घेरे में ले सकते थे, चाँदी के तार से कशीदाकारी की गयी है। शरद ऋतु की मुरझायी हुई पत्तियां उड़ कर गिरी नहीं थीं और यह विशाल वृक्ष चोटी तक सफेदी में लिपटी हुई पत्तियों से सजा हुआ था।

"तो उसका यह मतलब था। शीतकालीन ओकवृक्ष यह है!"

आन्ना वासिलिएवना कुछ कदम इस विशालकाय वृक्ष की दिशा में बढ़ीं और जंगल के इस प्रहरी ने धीरे-धीरे उनकी दिशा में अपनी एक डाल झुका दी।

कोलिया को इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था कि उसकी अध्यापिका के मस्तिष्क में क्या विचार करवटें लेरहे है; वह पेड़ की जड़ के पास कुछ करने में व्यस्त था; वह पेड़ के साथ एक चिर-परिचित व्यक्ति की तरह व्यवहार कर रहा था!

"आन्ना वासिलिएवना, देखिये यह कौन है।"

जोर लगाकर उसने बर्फ का एक बड़ा-सा ठोस टुकड़ा उखाड़ा जिसके नीचे मिट्टी और सड़ती हुई पत्तियों की एक तह जमी हुई थी। वहाँ एक छोटे-से गढ़े में सड़ी हुई पत्तियों की एक पतली-सी तह में लिपटी हुई कोई गोल चीज पड़ी हुई थी। उसके बाहर को निकले हुये पैने काँटों को देखकर आन्ना वासिलिएवना समझ गयीं कि वह साही है।

"यह कम्बल भी बस ऐसा ही है," बालक ने बड़ी सावधानी

से सोये हुये उस पशु की रक्षा के लिए उस पर बर्फ का टुकड़ा फिर रख दिया।

वह आन्ना को अपने उस छोटे-से राज्य की सैर कराता रहा। कई छोटे-छोटे जीव जन्तुओं ने, छिपकलियों, कीड़ों ने ओकवृक्ष में शरण ले रखी थी : कुछ ने जड़ों के नीचे गहरे-गहरे बिल खोद लिये थे, कुछ दूसरों ने छाल की दरारों में छुपने के लिये सुविधाजनक स्थान ढूँढ लिये थे। वे इतने क्षीण हो गये थे कि वे बिल्कुल खोखली सिपियों जैसे दिखायी पड़ते थे; वे गहरी अविराम निद्रा की गोद में विलीन होकर जाड़ा गुजार रहे थे। इस शक्तिशाली वृक्ष में, जो जीवन से इतना परिपूर्ण था, जीवनदायिनी उष्णता का इतना अगाध भंडार था कि हर प्रकार के लाचार जीव-जन्तु जिन्हें इससे अच्छा आश्रय कहीं और नहीं मिल सकता था, उसके पास खिचकर आते थे। आन्ना वासिलिएवना बहुत प्रसन्न होकर जंगल के रहस्यमय जीवन का अवलोकन कर रही थीं, जिसके बारे में उन्हें बहुत ही थोड़ा ज्ञान था; इतने में उन्हें कोलिया का चिन्तित स्वर सुनायी दिया : "गजब हो गया, मां तो अब चली गई होंगी।"

आन्ना वासिलिएवना चौंक पड़ीं और फिर उन्होंने जल्दी से अपनी घड़ी पर नजर डाली। सवा तीन बज चुके थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह किसी जाल में फँस गई हो।

"कमाल है," उन्होंने सोचा, "एक मनुष्य की अपूर्णता का इससे अच्छा प्रमाण क्या हो सकता है!" उनका ध्यान आज स्कूल में उन्होंने जो कुछ पढाया था, अब से पहले जो कुछ पढ़ाया था उसकी ओर गया। कैसा अभाव, कैसी भावहीनता थी। शब्दों के प्रति, मनुष्य की वाणी के प्रति उनके रवैये में भावनाओं की कितनी कमी थी, उस चीज के प्रति जिसके न होने से मनुष्य संसार की

विविध वस्तुओं को देखकर अवाक् रह जाता है, अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता। जितना सुन्दर और उदार स्वयं जीवन है वाणी को भी उतना ही ताजा, सुन्दर और समृद्ध होना चाहिये।

और तिस पर उन्हें यह नाज था कि वह एक कुशल अध्यापिका है। यह बिल्कुल संभव था कि उन्होंने अभी तक उस मार्ग पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया था जिसे तै करने के लिये एक पूरा जीवनकाल भी काफी नहीं है। वह मार्ग, किधर है वह मार्ग? पर समझ में न आने वाले उस उल्लास में, जिसके साथ बच्चे उत्तर दे रहे थे: "ट्रैक्टर.. कुआँ.....चिड़ियाखाना", उन्हें अपसे मार्ग की पहली मंजिल के धुँधले से चिन्ह दिखायी देने लगे।

"अच्छा सावुकिशन, इस रोचक सैर के लिये धन्यवाद। तुम इस छोटे रास्ते से आया करो, कोई हर्ज नहीं है।"

"धन्यवाद, आन्ना वासिलिएवना।"

उसका चेहरा लाल होगया, और वह अपनी अध्यापिका को यह आश्वासन देने के लिये बेचैन हो रहा था कि वह अब कभी स्कूल देर से नहीं आयगा पर उसे डर था कि कहीं वह अपने इस वादे को पूरा न कर सका तो क्या होगा। उसने अपने कोट का कालर खड़ा कर लिया और अपनी समूर की टोपी नीचे खींच ली। "मैं आपको घर तक पहुँचा आऊँ।"

"धन्यवाद कोलिया, मैं चली जाऊँगी।"

उसने अपनी अध्यापिका को शंका-भरी दृष्टि से देखा और फिर उसने जमीन पर से एक छड़ी उठाई और उसका टेढ़ा सिरा तोड़ कर छड़ी आन्ना वासिलिएवना को दे दी।

"अगर आपके रास्ते में को बारहसिंगा आप पर हमला करे

तो यह छड़ी उसे जड़ दीजिएगा और फिर देखियेगा वह कैसे चौकड़ी भरकर भागता है। लेकिन ज्यादा अच्छा यह होगा कि यह छड़ी उठाकर उसे डरा दीजियेगा नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि वह नाराज होकर हमेशा के लिए जंगल छोड़ दे।"

"अच्छी बात है कोलिया, मैं उसे मारूँगी नहीं।"

थोड़ी देर चलने के बाद आन्ना वासिलिएवना ने ओकवृक्ष पर आखरी बार नजर डालने के लिये पीछे मुड़कर देखा। वह उसी प्रकार वहां खड़ा था, डूबते हुये सूरज की किरणों के कारण उसकी सफेदी में गुलाबी रङ्ग का एक पुट आ गया था और उस विशालकाय वृक्ष की जड़ के पास एक छोटी-सी काली आकृति खड़ी थी : कोलिया अभी तक गया नहीं था वह दूर खड़ा अपनी अध्यापिका की रक्षा कर रहा था। और सहसा आन्ना वासिलिएवना ने अपने पूरे हृदय और आत्मा से यह अनुभव किया कि इस जंगल की सबसे उल्लेखनीय वस्तु वह शीतकालीन ओकवृक्ष नहीं बल्कि बहुत थोड़े कपड़े और नमदे के गंदे जूते पहने हुये वह नन्हा-सा मनुष्य था, भविष्य का यह विलक्षण तथा रहस्यमय नागरिक।

उन्होंने उसकी तरफ देखकर हाथ हिलाया और धीरे-धीरे उस चक्करदार रास्ते पर आगे बढ़ गईं।

जब सिपाही घर लौटा

—आन्द्रेई इवानोव

"अच्छा, विदा, कामरेड एवरस्तोव ! मैं तो अर्दाख जा रहा हूँ तुम्हारा मार्ग सीधा है। कुर्तानाई अगली पहाड़ी के पार है। वहां नई खान से लारियां जाती हैं। वे तुम्हें लगभग अन्त तक पहुँचा देगीं !"

"धन्यवाद मित्र ! मैं अब स्वयं चला जाऊँगा। यह मार्ग मेरा जाना-पहिचाना है।"

चौड़े कंधों वाला एक गठीला, याकूती भेड़ की सफेद खाल का कोट और सिपाहियों वाली भूरी हैट पहने हुये कैबिन में से उतरा। सधे हुये हाथों से उसने अपना थैला कंधे पर डाला और हाथ हिला कर ड्राइवर को विदा किया।

सफेद बर्फ से ढकी हुई लारी तेजी से दाहिनी ओर मुड़ी और टैगा के वनप्रदेश में गायब हो गयी; लारी के साथ ही उसकी उल्लसित गुनगुनाहट और उसके पहियों के नीचे बर्फ की चरमर भी चली गयी।

नवम्बर का महीना था। तापमान कम होता जा रहा था। चारों ओर बर्फ से सजे हुए पेड़ निश्चल खड़े थे। झारियाँ बर्फ में इस तरह दुबकी जा रही थीं मानो बर्फ के भीतर घुस जाना चाहती हों। सिपाही की पलकों और भवों पर बर्फ की मोटी-सी तह जमी हुई थी।

दोपहर तक वह अपने पहले निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुंच गया था।

घाटी में स्थित पांच छोटे-छोटे घरों से धुएँ की लकीरें हवा में ऊपर उठ रही थीं। धुएँ की यह लकीरें हवा में मिलकर सुरमई रङ्ग का बादल बनती और घरों पर मँडलाने लगतीं। ये बादल बहुत देर तक यहीं मँडलाते रहेंगे क्योंकि दोनों तरफ पहाड़ थे और ऊपर से ठण्डी हवा का दबाव था।

"मैं एक दिन आराम करके आगे जाऊँगा," सिपाही ने स्वयं निश्चय किया। "अभी तो मेरे पास कई दिन का समय है।"

पहले घर का द्वार खुला, एक लम्बा लाल दाढ़ी वाला आदमी लम्बा-सा समूर का कोट और बड़ी-सी खरगोश की खाल की टोपी लड़खड़ता हुआ भाप के बादलों से घिरा बाहर निकला। वह लम्बे-लम्बे डग भरता सड़क पर आगे बढ़ा और आन्तोन के पास पहुँचकर उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया।

"हमारे यहाँ आये हो या आगे जा रहे हो?"

"क्या अन्तर है?" आन्तोन ने बूढ़े की हल्की नीली आँखों में आँखें डाल कर पूछा।

"मैं यहाँ का चौकीदार हूँ, मुझे पता लगना चाहिये कि यहाँ कौन आता है।"

"मैं तो आगे जा रहा हूँ। मैं खुतुगू सुलुस* सामूहिक फार्म मे अपने घर जा रहा हूँ।"

"वह तो यहाँ से बहुत दूर है। किन्तु समझदार लोग तो खुतुगू सुलुस सामूहिक फार्म दूसरे ही रास्ते से जाते हैं।"

"यह तो ठीक है," आन्तोन ने सहमति प्रकट करते हुये कहा। किंतु मुझे अनफीसा ओजोगिना को उसके पति के बारे में बहुत आवश्यक बात बतानी हैं; मैं अभी आस्ट्रिया से वापस लौटा हूं।"

"क्या कोई गड़बड़ है ?" बूढ़े मे घबड़ाकर पूछा। "परदेश में कुछ भी हो सकता है।"

"नहीं सब ठीक-ठाक है। वह भी जल्द ही लौट आयेगा।"

"अच्छा, तो आओ मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूँ।" बूढा आन्तोन के आगे लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ चला और उससे असंख्य प्रश्न पूछता रहा।

"तो क्या वहां अब कोई ज्यादा काम नहीं रहा ?"

"हमारा मुख्य काम तो हमेशा अपने देश में ही रहता है। हम वहां अपनी मर्जी से तो थे नहीं। समय ही ऐसा संकट का था।"

"ठीक कहते हो।" बूढ़े ने सर हिलाकर सहमति प्रकट की— "उनका भी इसमें बहुत खर्च हुआ और हमारे लिये भी इसमें कोई सुविधा नहीं थी। यों भी हमें अपने देश में बहुत काम है।"

नीली आँखों वाली एक लम्बी-सी नौजवान स्त्री ने दरवाजा

---

*. याकूतियाई भाषा में "खुतुगू सुलुस" का अर्थ होता हैं "ध्रुव तारा"

खोला और उसे इतना आश्चर्य हुआ कि उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। वह छोटा-सा घर बहुत गर्म और सुखकर था। तीन खिड़कियों से काफी रोशनी आती थी, फर्श धोकर अभी-अभी साफ किया गया था, चूल्हे पर बहुत सुथरेपन से सफेदी की गयी थी; कोने में एक बड़ा-सा पलंग था और उस पर लैस का एक परदा पड़ा हुआ था।

'बड़ी मेहनती औरत है।" आन्तोन ने सोचा। उसके हृदय में उस औरत के लिये बड़ा सम्मान पैदा हुआ। "इतने वर्षों से अकेली है पर घर में हर चीज साफ-सुथरी और ठीक ढङ्ग से सजी हुई है।"

उसे इस बात की बड़ी खुशी थी कि वह इस सुन्दर परिश्रमी स्त्री के लिये शुभ समाचार लाया था।

"मैं तुम्हारे पति का पत्र लाया हूँ।" उसने बड़े उत्साह के साथ कहना आरंभ किया—"आट्रिया से। मैक्सिम मेरा दोस्त है; उसने मुझ से कहा था कि स्वयं यह पत्र तुम्हें पहुँचादूँ।"

उसने सिपाही को खाने की मेज के सामने बिठाया, उसके लिये चाय बना दी और जल्दी-जल्दी पत्र पढ़ने लगी। आन्तोन धीरे-धीरे खौलती हुई चाय पी रहा था; उसे इस बात की खुशी थी कि वह इस गर्म-आरामदेह घर में आराम करेगा और घर की मालकिन को उसके पति के बारे में बतायेगा।

परदे के पीछे एक बच्चा उखड़ी-उखड़ी साँसें लेने लगा; उस की सांसों में एक खरखराहट थी।

"बहुत थक गया होगा और शायद कोई बुरा स्वप्न देख रहा होगा।" आन्तोन ने सोचा। उसे याद आया कि उसके पिता ने कितने स्नेह के साथ उसे अपने बेटे के बारे में बताया था। "ठीक

है, पिता शीघ्र ही घर लौट आयेगा। तब घर में कितनी खुशी होगी।"

उस स्त्री ने पत्र पढ़कर कांपते हाथों से उसे लिफाफे में रख दिया। उसकी आँखों में आँसू छलक आये थे।

"घर जल्दी आने का वायदा किया है, और यहाँ हम लोग किस मुसीबत में फँसे हुये हैं....."

"क्या कहा ?" सिपाही ने सतर्क होकर पूछा।

जल्दी-जल्दी उसने सिपाही को अपने बेटे की सख्त बीमारी के बारे में बताया मानो वह अपने किसी पुराने मित्र से बातें कर रही हो। उसने कहा कि डाक्टर को बुलाना आवश्यक है पर डाक्टर मिले कहाँ ? खान के पास डाक्टर मिल सकता है। मगर जमी हुई बर्फ के कारण नदी का रास्ता रुक गया है। खान तक पहुंचने का कोई उपाय ही नहीं है—न लारी से, न घोड़े पर, न पैदल। और टेलीफोन भी तो नहीं है।

वह उठकर परदे के पास गयी और उसे खींच दिया। पलंग पर लगभग सात वर्ष का एक बालक लेटा हुआ था, उसके गाल तमतमाये हुए थे।

"सुना है पहाड़ पर होकर एक रास्ता है," उस स्त्री ने धीमे स्वर में कहा।

"वह भी कोई रास्ता है," आन्तोन ने उत्तर दिया।

वह स्त्री आह भरकर खिड़की के पास चली गई।

"जाड़ों के दिनों में दर्रे में हवा इतने जोर की चलती है कि पहाड़ की चट्टानें तक टूटने लगती हैं," आन्तोन कहता रहा।

"तुम यह सब क्यों कह रहे हो ?" उस स्त्री ने उसकी तरफ

देखे बिना कहा। थोड़ी देर तक एक बेतुकी-सी निस्तब्धता छाई रही।

आन्तोन ने बच्चे के चेहरे पर लाल धब्बों को, कम्बल पर पड़े हुए उसके पतले-पतले कमजोर हाथों को और फिर स्त्री की ओर मुड़कर देखा।

"तुम्हारे पास स्की हैं?" आन्तोन ने कहा।

पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

"कहाँ जाना चाहते हो तुम?" उसने उत्सुकता से पूछा और उसके पास तक गई। "तुम थके हुये हो।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं! याकूतिया के लोगों में बड़ी सहन-शक्ति होती है। वे कितनी ही दूर तक चल सकते हैं।"

फिर उसने अपने मन में सोचा, "लो, यह एक और काम है तुम्हारे लिए। आराम करने का कोई मौका नहीं है।"

पहले पहाड़ी दर्रे पर पहुँच कर ही आन्तोन को यह आभास हुआ कि रास्ता कितना कठिन है। थकावट से उसके कंधे झुके जा रहे थे और उसके पैरों में जैसे बेड़ियाँ पड़ गई थीं। साठ किलोमीटर का रास्ता था। नदी के रास्ते तो नब्बे किलोमीटर का फासला था। इस रास्ते से दूरी तो तीस किलोमीटर कम थी पर रास्ता सौगुना कठिन था। फिर नदी का रास्ता बन्द भी तो था, और चारा ही क्या था।

सौभाग्यवश दर्रे में बर्फ नहीं जमी हुई थी। दर्रा दो ऊँची-ऊँची ऊबड़-खाबड़ निर्जन चट्टानों के बीच एक फाटक के समान था। निर्जन चट्टानें नील गगन में अपना मस्तक ऊँचा किये खड़ी थीं। ये जानी-पहचानी जगह थी। गर्मियों में भी इस दर्रे में ठण्डक और नमी

रहती थी। यहीं बादल बनते थे और आर्द्रता से भरे हुये यह बादल यहां से घाटियों में जाते थे।

उसे कुर्तानाई के उस घर की, पलंग पर लेटे हुये उस निस्सहाय बालक की याद आई; उसके हृदय में पीड़ा उत्पन्न हुई और वह अपनी थकन को भूल गया !

हवा चलना आरंभ होने से पहले घाटी में पहुंच जाना चाहिए। आगे छः पहाड़ थे और छः दर्रे। यह तो सच है कि वे पहले वाले से छोटे थे फिर भी उन्हें पार तो करना ही था।

वह आराम किये बिना ही शिकार करने के चिर-परिचित स्थानों पर और उन रास्तों पर जिनसे होकर पशु गुजरते थे, एक पुराने शिकारी की तरह नजर डालते हुये तेजी से आगे चल पड़ा। शिकारियों की टोली के साथ यहां आया जाय तो बड़ा अच्छा रहेगा !

.....चार दर्रे पीछे छूट चुके थे। सुरमई रङ्ग का आकाश गहरे नीले रङ्ग का हो गया और उस पर चमकदार सितारे जगमगाने लगे। दूर पर जो पेड़ थे वे धुंधले होते गये। घाटी में सर्दियों की लम्बी रात का आगमन हो गया।

"मैं तेज नहीं चल रहा हूँ," आन्तोन ने सोचा। "वह स्त्री ठीक ही कहती थी कि आराम किये बिना रास्ता तै करना कठिन होगा।"

बैठ जाने को उसकी इच्छा हुई। आराम करने के लिये कम-से-कम थोड़ी देर के लिये किसी पेड़ का सहारा लेकर बैठ जाये।

उसने अपने आपको धिक्कारने और अपना उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न किया। पर उसके पैर जवाब दे रहे थे। वह बर्फ पर गिर पड़ा और एक पेड़ के तने का सहारा ले कर बैठ गया।

तारों का पुलकित झुरमुट मानो झूले पर झूलता हुआ पृथ्वी की तरफ पैंगें बढ़ा रहा था। बर्फ की चमक आंखों को चकाचौंध कर रही थी। एक क्षण में हर चीज गुलाबी दिखाई देने लगी जैसे पहाड़ों पर बसंत ऋतु के प्रभात का आगमन हो रहा हो। गुलाबी प्रकाश अत्यन्त सुखकर और हृदय को गरमाने वाला था। स्लेज गाड़ियों की घंटियों की धीमी-धीमी आवाज सुनाई दे रही थी। घंटियों की आवाज तेज होती गई और फिर धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई दूर चली गयी, जैसे बारहसिंहों का उल्लासपूर्ण झुण्ड हो।

.....आन्तोन की आंखें बडी कठिनाई से खुलीं। वही बर्फीली रात थी। आकाश पर वही चमकदार सितारे जगमगा रहे थे। उसके हाथों और पैरों की उंगलियों में पीड़ा हो रही थी। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसे रस्सों से जकड़ दिया गया हो; उसका शरीर शिथिल और भारी हो रहा था।

'मैं बर्फ में जम जाऊँगा! मैं भी कितना मूर्ख हूँ कि सो गया!'' आन्तोन अपने आपको धिक्कारने लगा।

वह लार्च के वृक्ष की एक टहनी पकड़ कर उठने लगा। कई बार कोशिश करने के बाद वह खड़ा हो गया। अपने पैरों की ओर ध्यान दिये बिना वह जल्दी-जल्दी स्की पहनकर चल खड़ा हुआ।

वह अपने घर के बारे में सोच रहा था। उन लोगों को उसका पत्र मिला होगा और वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। उसका बूढ़ा पिता गाँव के सिरे पर जाकर बर्फ से ढकी हुई सड़क को देख रहा होगा। उसकी माँ दरवाजे पर हर आहट को कान लगाकर सुन रही होगी। उसने अपने पत्र में उतनी थोड़ी-सी बातें लिखकर उनके साथ अन्याय किया। "मेरे प्रियजनो, कुछ दिनों प्रतीक्षा करो, मैं अब कभी

तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा। बस, मैं अस्पताल में सूचना देकर डाक्टर से मिलकर सीधे घर आता हूं।"

घर के विचार से उसके शरीर में गरमी और शक्ति आ गई। अब वह जान-बूझकर घर के बारे में और अनफीसा ओजोगिना तथा उसके बेटे के बारे में सोचने लगा। इससे उसे रास्ता कुछ छोटा मालूम होने लगा।

अन्तिम दर्रे पर चाँद आन्तोन का स्वागत करने को निकला। पहाड़ियों पर शुभ्रज्योत्स्ना फैल गई और घाटियों में लम्बी-लम्बी तिरछी परछाइयाँ पड़ने लगीं। जब वह दर्रे के शिखर पर पहुंचा, उस समय उसे ऐसा लगा कि चाँद ऊपर चढ़ते-चढ़ते रुक गया हो, मानो पहाड़ पर मनुष्य को देखकर उसे बड़ा विस्मय हुआ हो!

"तुम किस बात से डर रहे हो?" उसने चाँद से पूछा। "अब तो नौ किलोमीटर रास्ता रह गया है।"

सड़क चक्कर खाती-लहराती हुई आगे बढ़ी जा रही थी, चांद कभी दाहिनी तरफ दिखाई देता था कभी बायीं तरफ। मानो उस साहसी यात्री को अच्छी तरह देखकर अपने ध्यान में अंकित कर लेना चाहता हो!

आखिरकार आन्तोन एक पक्की सड़क पर पहुँच गया जो एक बर्फ से जमे हुये पहाड़ी चश्मे के किनारे-किनारे जाती थी।

एक स्थान पर पहुंचकर वह एक मिनट के लिये रुक गया। यही वह मोड़ था जहाँ से उड़के सामूहिक फार्म को रास्ता जाता था। वहां से बारह किलोमीटर पर उसका घर था, जहां वह कई वर्षों से नहीं गया था, जहाँ दिन रात उसकी प्रतीक्षा हो रही थी। जब वह

साठ किलोमीटर का रास्ता तै कर आया था तब बारह किलोमीटर क्या थे।

पर उसने केवल एक गहरी आह भरी और खान की तरफ जाने वाली सड़क पर चल पड़ा।

आगे मोड़ पर उसे एक बत्ती दिखाई दी, पहले एक, फिर दूसरी, और फिर तीसरी। ये चमकती हुई बत्तियाँ निकटतर होती जा रही थीं। अपनी क्षीण होती हुई शक्ति को बटोरकर आन्तोन ने अपनी गति तेज की।

अस्पताल पहुँचकर उसने बर्फ पर फिसलने के जूते बरसाती में उतार दिये, धक्का देकर दरवाजा खोला और बरामदे के उष्ण वातावरण में पहुँचकर वह एक गद्देदार कुर्सी में धँस गया। उसकी शक्ति बिल्कुल समाप्त हो चुकी थी।

उसने धुँधली आँखो से एक अपरिचित स्त्री को अपने शरीर पर झुका हुआ देखा और जैसे दूर से किसी का अपरिचित स्वर आता हुआ सुना, "तुम्हें क्या हुआ है? कहाँ से आ रहे हो?"

"कुर्तानाई में एक बच्चा मर रहा है। डाक्टर की प्रतीक्षा में। एक लड़का .....सिपाही का बेटा! समझीं।"

"टिक-टिक! टिक-टिक!" उसके मस्तिष्क में जैसे घड़ी चल रही थी।

बहुत प्रयत्न करके उसने आँखें खोली। दीवार पर लगी हुई घड़ी चार बजा रही थी!

"सुबह हो गयी," आन्तोन ने सोचा। "बारह घण्टे का..."

× × × ×

मां के हृदय की चिंता बढ़ती जा रही थी। दिन समाप्त हो

गया था। रात को बच्चे की दशा और खराब हो गई। आन्तोन खान तक पहुँचा भी कि नहीं ? वह अपने बेटे के पलंग के पास घुटने टेककर बैठ गई और अपने पति को सम्बोधित करके दबी जबान में बोली :

"मैथ्यू, प्यारे मैथ्यू ! मैं अपने बच्चे को विपदा से न बचा सकी। हमारा ध्रुव तारा डूब रहा है। मैं क्या कर सकती हूँ ? मैं तुम से क्या कहूँ ?"

उसका बड़ा-सा रूमाल उसके कंधे से सरक गया। उसके कंधे काँप गये।

लम्बी घड़ियां थके-थके कदमों से आगे घिसट रही थीं। सुबह-आई, नया दिन आया और फिर शाम हो गयी। यंत्रवत् बिना यह जाने कि वह क्या कर रही है, अनफीसा ने चूल्हा जलाया, अपनी झोपड़ी साफ की और फिर पलंग के पास जाकर बैठ गयी।

"वह कहां रह गया ? क्या वह वहां तक पहुँच नहीं पाया ?" वह आन्तोन के बारे में सोचने लगी।

"अनफीसा वे आ रहे हैं !" गोदाम के चौकीदार ने जल्दी से घर में घुसते हुए कहा।

अनफीसा उसकी तरफ दौड़ी।

"कौन आ रहा है, लारियां ? क्या वह बर्फ को पार कर आईं ?"

"नहीं, कुछ लोग आ रहे हैं। पहाड़ के उस पार से, खान से।"

वह झोपड़ी में इधर-उधर भागने लगी, कभी अपना कोट उतार कर उनसे मिलने को बाहर भागती और कभी झपट कर अपने

बेटे की तरफ जाती।

चौकीदार उसे खिड़की के पास ले गया।

"वह देखो !"

दो आकृतियाँ बर्फ पर फिसलती हुई पहाड़ी की ढलान से नीचे आ रही थीं। उनमें से एक उसके पति का मित्र था। उसके हाथ में एक छोटा-सा बक्स था। दूसरा व्यक्ति कुछ छोटे कद का था और उसके कंधे भी कम चौड़े थे।

सिपाही की पत्नी ने बरसाती में उनका स्वागत किया। भावावेश में उसने आन्तोन को गले लगाया और फिर जल्दी से डाक्टर का कोट उतारने के लिये आगे बढ़ी। उसने उसके भेड़ की खाल के हल्के-से कोट के बटन खोले, गले से मफलर खोला और जब उसकी टोपी उतारी तब उसे मालूम हुआ कि वह डाक्टर वास्तव में एक कोमलांगी लड़की थी।

"हे भगवन्, तुमने पहाड़ का रास्ता कैसे पार किया ?"

"क्यों क्या हुआ ?" लड़की ने मुस्करा कर उत्तर दिया। "तुम इन्तजार कर रही थी ना ?"

डाक्टर ने अपना सफेद लबादा पहना, हाथ धोये और फिर पलंग के पास जाकर बालक का टेम्परेचर लिया। उसके चेहरे पर गहरे चिंतन के बादल छाये हुये थे। उसकी चौड़ी घनी भवें सिकुड़ कर उसकी नाक के ऊपर एक दूसरे के और निकट आ गईं।

"अच्छा ही हुआ जो हमने जल्दी की," उसने नरमी से कहा। "लड़के की हालत खराब है। कल तक बहुत देर हो जाती।"

"और अब ?" माँ ने भय-से पूछा।

"चिंता न करो...बच जायगा।"

आधे घण्टे बाद उस स्त्री ने डाक्टर और सिपाही को खाने की मेज पर ला बिठाया और उनके सामने गोश्त और तले हुये आलू रख कर चाय के लिये पानी गर्म करने के बाद कोयलों को कुरेद कर अंगीठी की आँच तेज करने लगी। शीघ्र ही पानी खौलने लगा और केतली का ढक्कन भाप के जोर से खड़खड़ाने लगा। अनफीसा ने केतली को मेज पर ले जाने के लिये अंगीठी पर से उठाया पर फिर उसे वापस रख दिया। डाक्टर और उसका मार्गदर्शक दोनों ही अपनी बांहों पर सर रखे गहरी नींद में सो रहे थे।

कमरे में शान्ति थी। केवल सोते हुये लोगों की नपी-तुली साँसों का स्वर और अंगीठी पर रखी हुई केतली की शिकायत भरी फुफकार सुनाई दे रही थी।

बूढ़ा ज़ान्द्रा

—निकोलाई रोजकोव

वह शहर अभी केवल ३० वर्ष पहले स्थापित हुआ था, लेकिन फिर भी उसे नया शहर नहीं कहा जा सकता था। हम लोग इसी शहर के बाहर उत्तर की ओर चिंगिल-तू पर्वत की ढलान पर बैठे हुये थे। हमारे दाहिनी तरफ एक मठ की इमारत थी जो मांचू सम्राट ने १८वीं शताब्दी में बनवाई थी।

हमें मठ की घंटियों की धीमी-धीमी आवाज सुनाई दे रही थी। छतों की अबाबील के पंखों जैसी मेहराबदार कार्निसों के नीचे लगी हुई छोटी-छोटी घंटियां हवा से हिल रही थीं। भिक्षु और अलमारियों जैसी लाल रङ्ग की वेदियों पर सटाकर रखे हुये उनके लामाई देवताओं का हमेशा यह दावा रहा था कि यह शहर हजारों वर्ष पुराना था। जहां तक उनका संबंध है, समय की गति बहुत पहले ही रुक चुकी थी। घंटियों की आवाज मुश्किल ही से सुनाई

देती थी; उनकी आवाज इमारतों के निर्माण के कोलाहल में खो गई।

हम से मेरा अभिप्राय है मैं खुद, जो हाल ही में इस देश में पत्रकार की हैसियत से आया हूँ और राज्यीय पुरालेखशाला के वैज्ञानिक कार्यकर्ता—जान्द्रा। जिस दिन जान्द्रा से मेरी मुलाकात हुई उस दिन पुरालेखशाला के निर्देशक ने मुझे अलग ले जा कर कहा :

"इस वैज्ञानिक को जितनी बातें मालूम हैं, उनमें से बहुत-सी आपको पुरालेखों में नहीं मिलेंगी। यह बूढ़ा अगर तुमसे खुश हो गया तो शायद वह तुम्हें कुछ ऐसी कहानियां सुनायगा जिन्हें परियों की कहानियाँ तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी यह विश्वास करना कठिन है कि वे सच हैं।"

और इस लिये हम मठों के काई से भरे आँगनों में जान्द्रा के साथ घूम रहे हैं; कभी आराम करने के लिये कोलाहलमय होटलों में रुक जाते हैं; विश्वविद्यालय में लेक्चर सुनते हैं; पीकिंग और मास्को जाने वाली ट्रेनों को देखते हैं या गीत-नाट्य थिएटर में कला-प्रदर्शन का आनन्द लेते हैं। पर यह बूढ़ा कम ही बोलता है; उसका यह नियम सा है कि वह केवल बात सुनता रहता हैं और मुझे सारी देर बात करने देता है।

वह उस समय भी चुप रहा था, पर मैंने वहाँ के शिष्टाचार को भंग करने का साहस किया।

"आपने तो बहुत जमाना देखा होगा?" मैंने पूछा, यद्यपि मैं जानता था कि किसी बूढ़े आदमी से ऐसी बात के बारे में पूछना, जिसका जिक्र वह खुद न छेड़े, शिष्टता के खिलाफ है।

पर जान्द्रा ने मेरी तरफ मुड़कर देखा भी नहीं। या तो वह उत्तर देना ही नहीं चाहता था अथवा उसने मेरा प्रश्न सुना ही नहीं था; उसके विचार दूर, कहीं बहुत दूर, भटक रहे थे।

"आप तो बहुत कुछ जानते होंगे! आप अपनी जानकारी के खजाने का क्या थोड़ा-सा हिस्सा भी मुझे देने को तैयार नहीं हैं?" मैंने एकबार फिर शिष्टाचार को भङ्ग करते हुये कहा। बड़ों से कभी कोई बात पूछना नहीं चाहिये—वे खुद जानते हैं कि कौन-सी बात कब छोटों को बतलानी चाहिये।

"मेरी स्मृति बहुत पुराने लेखों के संग्रह की जैसी हो गई है," जान्द्रा ने आखिरकार कहा। "उनमें जो शब्द सुरक्षित हैं, वे समय की गति के साथ मिटते जाते हैं। मैं इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि पुरानी बातों को याद करना मेरे लिये बहुत कठिन है।"

हम फिर खामोश हो गये। डूबते हुए सूरज ने फैक्टरी की खिड़कियों में उत्सव के दीप जला दिये। घाटी में संध्या का आगमन हो रहा था। फैक्टरी का भौंपू सुनाई दिया; इस शहर के तीस वर्ष पूरे होने की घोषणा की गई; दिन का काम खत्म हुआ।

और यकायक सैकड़ों साइकिल सवारों ने शहर के चौक और सड़कों पर धावा बोल दिया। बड़ी-बड़ी सड़कों से वे छोटी-छोटी गलियों में, बल्लियों की चहारदीवारी वाले अहातों में मुड़ गए। कुछ साइकिलों पर तो दो-दो, तीन-तीन लोग बैठे हुये थे; आगे डंडे पर बच्चा और पीछे कैरियर पर बीवी।

थोड़ी ही देर में सड़कें फिर सूनी हो गईं।

जान्द्रा ने सूर्यकान्तमणि की लम्बी नली वाला अपना पाइप

निकाला, उसमें तम्बाकू भरा और सिगरेट लाइटर से उसे सुलगा लिया।

बड़ी देर तक वह पाइप के कश लेता रहा। ठण्ड बढ़ती जा रही थी। मैं चलने के लिये उठ खड़ा हुआ।

"जरा ठहरो," उसने कहा, "शायद मुझे याद है...."

बूढ़े जान्द्रा ने जो कहानियां मुझे सुनाईं, उनमें से एक यह है :

तुम्हें हमारे शहर में रहते हुये एक महीने से अधिक हो गया है और अपनी जेब से मोमजामे की जिल्दवाली डायरी निकाल कर यहाँ के लोगों की कहानियां भी लिखते रहते हो। तुम पैदल और घोड़े पर घूमते रहते हो और हमारे जीवन को एक मित्र की दृष्टि से देखते हो।...

तुमने मुझ से पूछा था कि क्या मैं जानता हूँ कि प्रेम क्या है और क्या मैंने अपने इस लम्बे जीवन में कभी प्रेम देखा है। तो मैं तुम्हें बताता हूँ : हाँ, सिर्फ देखा ही नहीं है, मैंने ऐसा प्रेम देखा है जो सत्य की तरह अमर है। परंतु लोग प्रेम शब्द का प्रयोग पुरानी चीजों के आदान-प्रदान के अर्थ में करते हैं, जब कि एक साथी दूसरे को अपने स्वार्थ के लिये धोखा देने का प्रयत्न करता है।

मेरी कहानी बहुत छोटी है, यद्यपि उसका कोई अन्त नहीं है। क्या सच्ची प्रीत का कोई अन्त हो सकता है?

....जब हमारा मशहूर पहलवान उस्ताद दागवा--उसने यह उपाधि बड़े-बड़े पहलवानों को हराकर प्राप्त की थी--पहाड़ से अपनी दुल्हन जोम्बाक को लेकर लौटा तो वे सभी "बाज" "हाथी" और "शेर," जिन्हें उसने कुश्ती में पछाड़ा था, उसकी शादी में आए।

दागवा के खेमे में जाकर पहलवानों ने पुरानी प्रथा के अनुसार उपहार दिये और पति की शक्ति और पत्नी के सौंदर्य को सराहा।

वे सब खुश थे, बस एक गूंगा को छोड़ कर जो दागवा का सबसे अच्छा मित्र और अखाड़े में उसका सबसे बड़ा प्रतिद्वन्द्वी था।

गूंगा बच्चों की तरह रूठा हुआ बैठा था; उसे जोम्बाक से नफरत थी। उसे शिकायत थी कि उसने उसके मित्र का हृदय अपने वश में कर लिया था। अकेला गूंगा ही ऐसा था जो दागवा के लिये कोई उपहार नहीं लाया था और शादी की दावत में भी वह त्योरियां चढ़ाये हुये दरवाजे के पास बैठा रहा यद्यपि स्वयं भी 'उस्ताद' की उपाधि से विभूषित होने के कारण उसे दागवा की दाहिनी तरफ बैठने का अधिकार था।

पांच दिन तक समारोह जारी रहा। इसके बाद और पांच दिन तक पहलवान जोर आजमाते रहे और एक बार फिर दागवा ने सब पहलवानों को हरा दिया। लेकिन गूंगा ने हाथ में दर्द का बहाना करके अपने मित्र से कुश्ती लड़ने से इन्कार कर दिया।

दस दिन तक दागवा और जोम्बाक सुखी रहे। वे चुम्बनों से सूर्योदय और संध्या के पहले सितारे का स्वागत करते थे।

पर यह सुख भी कितना क्षणभंगुर और अशुभ था!

जब मुसीबत आती है तब वह आपके घर में रखैल की तरह आ बसती है और आप उसे रोक नहीं सकते। ग्यारहवें दिन अपशकुन की तरह यह खबर आई: 'शत्रु ने हमारे देश पर हमला कर दिया है।' शहरों पर, स्तपीय मैदानों में और उन रास्तों पर जिन पर काफले गुजरते थे, सन्नाटा छा गया। हर परिवार सिपाहियों

का परिवार बन गया।

देश की पुकार पर आगे आने वालों में गूंगा और दागवा नामक पहलवान सबसे आगे थे। पर लड़ाई पर जाने से पहले दागवा ने अपनी पत्नी से विदा लेने की इजाजत माँगी।

विदा लेने में उन्हें चौबीस घण्टे लग गये। और इन चौबीस घण्टों तक गूंगा लगातार खेमे के दरवाजे पर खड़ा उनके प्रेम की रक्षा करता रहा। पर पहले की ही तरह उसके हृदय में जोम्बाक के लिए कोमल भावनाएँ नहीं थीं।

उस्ताद दागवा अपनी पत्नी को बच्चे की तरह गोद में उठाये हुये था। जोम्बाक कस कर उससे चिपटी हुई थी। जोम्बाक की गर्म सांसें लपटों की तरह उसे झुलसा रही थीं। उसने अपने पति के कान में कहा : "मुझे भी साथ ले चलो ! देखो तो मैं कितनी छोटी हूँ। कूच के दौरान में मुसीबत के वक्त मैं तुम पर बोझ नहीं बनूंगी। और तुम्हारे लिये मेरे हृदय में जो प्रेम है, वह मुझे ताकतवर बना देता है। मुझे भी साथ ले चलो, मैं लड़ाई की कठिन घड़ियों में तुम्हारा दुःख बटाऊँगी।"

दागवा कुछ नहीं बोला, पर उसने अपने दांत इतने कसकर भींच लिये कि उसके मसूढ़ों में खून आ गया।

और जब सुबह हुई तो दागवा पहलवान ने अपनी पत्नी को चुपके से कालीन पर लिटा दिया और बाहर निकल गया; उसको पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

"जरा ठहरो !" जोम्बाक ने चिल्लाकर कहा।

दागवा के पैर जवाब देने लगे।

जोम्बाक घड़ी के पास गई और उसने उसका पेण्डुलम रोक दिया; उस दिन सुबह तक वह उनके सुख की घड़ियों को गिनती रही थी।

"तुम निश्चिंत होकर जाओ," जोम्बाक ने अनुरोध किया। "और मैं तुम्हें यह भी बता देना चाहती हूँ कि मैं तुम्हारे अलावा अब और किसी को यह घड़ी चलाने नहीं दूँगी। अबसे केवल मेरे हृदय की धड़कनें हमारे विरह की लम्बी घड़ियों को गिना करेंगी। और अगर तुम लौट कर न आये तो मैं अपने हृदय की गति भी उसी तरह रोक दूँगी जैसे मैंने यह घड़ी रोक दी है। अच्छा अब जाओ!"

यह कहकर जोम्बाक ने अपना मुँह दीवार की तरफ फेर लिया ताकि वह अपने पति को खेमे से बाहर जाता हुआ न देखे।

तुम्हें शायद याद होगा कि हमारा शत्रु कितना क्रूर और निर्मम था। और शायद तुम्हारे देश के सिपाहियों की सहायता के बिना हम उसे पराजित भी न कर सकते!

मगर हमारे यहाँ के बूढ़े लोग कहते हैं कि मुर्दा भेड़िया भी काट सकता है।

युद्ध के आखिरी दिन दागवा और गूँगा ने शत्रु की सेना के बारे में सूचना प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुये नूर-गोल पहाड़ पर लड़ाई मे हिस्सा लिया लिया। यह सचमुच सूरमाओं की लड़ाई थी। ऊपर से नीचे तक पहाड़ी की ढलान शत्रु की लाशों से पटी पड़ी थी। पहाड़ी के ऊपर बारूद का धुआँ काले बादल की तरह मँडला रहा था और जबर्दस्त धमाकों से पत्थर चूर-चर हो गये थे।

जब शत्रु के आखिरी सिपाही ने दम तोड़ दिया और हवा से धुएँ के बादल छंट गये, तो गूँगा पहाड़ी से नीचे उतरा। उसका चेहरा आँसूओं से भीगा हुआ था। अपने बलिष्ठ हाथों में वह उस्ताद दागवा की लाश लिए हुए था।

...विजय की घड़ी में जो गीत पैदा हुआ था वह पहाड़ियों के ऊपर, रेगिस्तान के ऊपर और स्तपीय प्रदेश के ऊपर सैकड़ों चिड़ियों के कलरव की तरह गूँज रहा था; हर घर में, हर खेमे में

खुशी मनाई जा रही थी।

सिपाही अपने-अपने घरों को लौट रहे थे।

परन्तु एक झोपड़ी के ऊपर कोई धुआं नहीं दिखाई दे रहा था।

अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहने जोम्बाक अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। मेज पर दावत के लिए तरह-तरह के पकवान सजे हुए थे। रेशमी रजाइयां और गद्दे पलंग पर तह किये रखे थे।

जोम्बाक दागवा की प्रतीक्षा कर रही थी।

आखिरकार उसे किसी के बोझल कदमों की आहट सुनाई दी। ये कदम किसी पहलवान के हो सकते थे। अपने पति की चाल से वह इस बात को अच्छी तरह जानती थी।

दरवाजे के किवाड़ पर एक विशालकाय छाया पड़ी—वह केवल उसके पति की छाया हो सकती थी।

जोम्बाक ने अपनी आंखें बन्द कर लीं और अपने पति का स्वागत करने के लिए उसने अपनी बाहें आगे फैलाईं ही थीं कि उसे मूर्च्छा-सी आ गई।

उसने उस व्यक्ति के अन्दर आने की आहट सुनी और फिर उसे ऐसा मालूम हुआ कि वह रुक गया।

यकायक कई महीने बाद पहली बार घड़ी की टिक-टिक की जोरदार आवाज सारे खेमे में गूंज उठी।

जोम्बाक ने आंखें खोल दीं।

घड़ी का पेण्डुलम मस्त हो झूम रहा था और अपना टिक-टिकटिक-टिक का निरन्तर संगीत सुना रहा था।

और उसके पास ही गूंगा खड़ा था, जो दागवा के ही जितना भीमकाय और ताकतवर पहलवान था।

"वहाँ," वह बोला, "नूर-गोल पहाड़ पर दागवा ने मुझसे वचन लिया था कि मैं तुम्हारे समय को उसकी गति लौटा दूँगा।"

फिर गूँगा सीधे मेज के पास गया और उसी कुर्सी पर बैठ गया जो दागवा की थी।

"तेरे पति ने मुझे इसकी आज्ञा दी थी!" वह बोला।

....अब आप मुझसे पूछ सकते हैं कि क्या जोम्बाक सचमुच अपने दागवा से प्रेम करती थी? मेरा उत्तर है: हां! अपने प्राणों से भी बढ़कर!

आप यह भी पूछ सकते हैं क्या जोम्बाक और गूँगा एक दूसरे के साथ सुखी हैं। और इस सवाल का भी उत्तर मैं यही दूँगा: हाँ, वे सुखी हैं और इस बात की पुष्टि के लिये मैं आपको यह भी बता दूँ कि उन्होंने अपने पहले बेटे का नाम दागवा रखा। उन्होंने उसका यह नाम इसलिए रखा कि सच्चा प्रेम अमर है।.....

जान्द्रा फिर सूर्यकान्तमणि की नली वाला पाइप पीने लगा।

\+ + + +

नीचे उस शहर में, जो केवल तीस वर्ष पुराना है, बत्तियाँ जगमगा रही थीं। ये सारी बत्तियाँ एक साथ नहीं जल गई थीं, बल्कि धीरे-धीरे, एक-एक सड़क, एक-एक ब्लाक करके जल रही थीं।

हम पहाड़ी के नीचे उतर आये।

हम से मेरा अभिप्राय है मैं खुद, जो हाल ही में एक पत्रकार की हैसियत से आया हूँ, और जान्द्रा, जो राज्यीय पुरालेखशाला का वैज्ञानिक कर्मचारी है।